सम्पादक
डॉ. हारून रशीद सिद्दीकी
सहायक
मु. गुफ़रान नदवी
मु. हसन अन्सारी
हबीबुल्लाह आज़मी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
मजलिसे सहाफ़त व नशरियात
पो0 बॉ0 नं0 93
टैगोर मार्ग, नदवतुल उलमा, लखनऊ
फोन : 0522–2740406
: 0522–2741231
E-mail :
nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि

एक प्रति	रु0 9/-
वार्षिक	रु0 100/-
विशेष वार्षिक	रु0 500/-
विदेशों में (वार्षिक)	रु0 25 युएस डालर

चेक / ड्राफ्ट पर यह लिखें

"सच्चा राही"

पता

सेक्रेटरी, मजलिसे सहाफत व नशरियात
नदवतुल उलमा, लखनऊ, 226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

Visoin Computers- 9838644687

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक
लखनऊ

दिसम्बर, 2008 वर्ष 7 अंक 10

हज्ज व कुर्बानी

जब दोनों राज़ी हो गये, तब बेटा बोला बाप से
ये दोनों मेरे हाथ हैं, और दोनों मेरे पांव हैं
चारों बंधे तज़्बूत हों, ता ज़ब्ह में ह़ारिज न हों
आंखों पे पट्टी बांध लें, ता ज़ब्ह में रुक ना सकें
यह सब किया फिर बाप ने, फेरी छुरी फिर बाप ने
जिन्नों मलक ख़ामोश थे, और सब के गुम अब होश थे
खोने लगे जब होश सब, रह़मत को आया जोश तब
आयी सदा ये ग़ैब से, रब्बे जहां बे ऐ़ब से
सच कर दिखाया ख़्वाब को, नाजेह बनाया आप को
पट्टी जो खोली आंख से, मज़बूह़ देखा सामने
जन्नत का दुंबा था पड़ा, जिस जा पे लेटा बेटा था
बेटा खड़ा वां पास था, क्या इम्तिह़ाने बाप था
उस इम्तिहाँ की याद में, उम्मत नबी की ख़ास में
ह़ज्ज उ़म्र में इक फ़र्ज़ है, पर इस्तिताअ़त शर्त है
और माल जिस के पास है, ह़क़ ये है कुर्बानी करे

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

विषय एक दृष्टि में

हज्जे इब्राहीमी व हज्जे मुस्तफवी अलैहिमस्सलाम	सम्पादकीय	3
कुरआन की शिक्षा	मौलाना मु0 मन्जूर नोमानी	5
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तसनीम	7
कारवाने ज़िन्दगी	मौ0 सै0 अबुल हसन अ़ली हसनी	9
सफ़ाई सुथराई और उसके आदाब	अल्लामा सैयद सुलैमान नदवी	12
कुर्बानी	मौलाना मुजीबुल्लाह नदवी	14
एक फ़त्वा	दारुल उलूम मजहरे इस्लाम बरेली	17
भारत का संक्षिप्त इतिहास	सैयद अबूज़फर नदवी	18
हम कैसे पढ़ाये?	डॉ0 सलामत उल्लाह	20
इस्लाहे मुआ़शरा	मौ0 बिलाल हसनी नदवी	22
पहचान एक अच्छे पड़ोसी की	डॉ0 मुज़फ़्फ़र अ़ली	26
इस्लामी फ़िक़्ह	मौ0 मुजीबुल्लाह नदवी	28
नअ़त व मन्क़बत	हैदर अली नदवी	29
इस्लामी जीवन व्यवस्था	शाह क़ादरी	30
कुरआन की पारिभाषिक शब्दावली	डॉ0 मु. अहमद	31
ब्रोनाई दारुस्सलाम	अब्रार हुसैन अय्यूबी	34
हिन्दी लिपि में उर्दू शब्द	इदारा	35
मानवता का संदेश	इदारा	36
अंतर्राष्ट्रीय समाचार	डॉ0 मुईद अशरफ नदवी	40

हज्जे इब्राहीमी व हज्जे मुस्तफवी अलैहिमस्सलाम

—डा. हारून रशीद सिद्दीकी

बेशक अल्लाह का पहला घर जो इस धरती पर लोगों के लिये बनाया गया वह, वह है जो मक्के में है, वह तमाम जहानों के लिये बरकत और हिदायात का ज़रीआ है।

यह पहला अल्लाह का घर लोगों के लिये अल्लाह के हुक्म और उस की मर्ज़ी से इस लिये बना ताकि लोग उस में और उस के गिर्द अल्लाह की इबादत करें, फिर अल्लाह ही जानता है कि कितने अरसे के बअद वह अल्लाह ही की मसलहत और मरज़ी से लोगों की नज़रों से ग़ायब कर दिया गया और आस पास का इलाक़ा ऐसा पथरीला बना दिया गया कि जहाँ न कोई आबादी न कोई दरख़्त न कहीं पानी का नाम व निशान ऐसी सूरत में कोई उस बरकत वाले घर को कैसे पहचानता और कैसे वहाँ इबादत करता, फिर जब अल्लाह की मसलहत में उस निअमत से अपने बन्दों को नवाज़ना मंजूर हुआ तो अपने ख़लील व महबूब नबी हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को हुक्म दिया कि जो तुम को बुढ़ापे में औलाद दी गई है यअनी अपने अक्लोते और महबूब लाडले इस्माईल (अलैहिस्सलाम) को उसी जगह पहँचा दो जहाँ कअबा था। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने हुक्म की तअमील की, अल्लाह तआला ने इब्राहीम अलैहिस्सलाम को वह जगह बता दी थी। बज़ाहिर बड़ा सख़्त वक़्त था जिस में एक जानिब इब्राहीम अलैहिस्सलाम का इम्तिहान था तो दूसरी जानिब अल्लाह तआला अपने बन्दों को अपनी बेश बहा निअमतों से नवाज़ाना भी था इसी मौक़ेअ पर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने दुआ की थीः "ऐ हमारे रब! मैंने अपनी बअज़ औलाद को तेरे बैते हराम के पास एक वादी में बसाया है जहां कोई खेती नहीं है। ऐ हमारे रब! मैं ने ऐसा इस लिये किया है ताकि वह नमाज़ क़ाइम करें, इस लिये तू लोगों के दिलों को इन की तरफ़ फेर दे और बतौर रोज़ी इनको अनवाअ व अक़्साम के फल अता कर ताकि वह तेरा शुक्र अदा करें। (14:37)

अल्लाह ही के हुक्म से इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अपने वालिद को तौहीद की दअवत दी क़ौम को तौहीद की दअवत दी लेकिन अल्लाह को यही मंजूर था कि बाप घर से निकाल दे, क़ौम आग में डाल दे ताकि क़ौम खुली आंखों अल्लाह की मदद का मुशाहदा कर ले और क़ौम पर इत्माम हुज्जत हो जाए। चुनांचि लोगों ने अपनी आखों देखा कि आग अल्लाह के हुक्म से इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर सलामती वाली बन गई। फिर भी ज़ालिम क़ौम न बदली, आख़िर कार इब्राहीम अलैहिस्सलाम हिजरत कर के फिलिस्ती आ गये। अब उम्र छियासी को पहुंच चुकी थी। कि रब ने इस्माईल जैसी औलाद से नवाज़ा तो कअबे को ज़ाहिर करने और उस के गिर्द बसाने की मसलहत से शीरख़्वार लाडले इस्माईल को वहाँ छोड़ देने का हुक्म हुआ जिस की तक्मील हुई जैसा कि शुरूअ में लिखा गया। फिर कैसी खुली हुई मदद आई हज़रते हाजर की सफा व मरवा के बीच दौड़, ज़मज़म का ज़ाहिर होना वग़ैरह।

लेकिन इन राज़ों को तो रब ही जाने ख़लील को तो इसी में मज़ा आता है कि उन का इम्तिहान चलता रहे और रब्बे ख़लील की यही मरज़ी है कि उनके ख़लील का इम्तिहान होता रहे। हुक्म होता है बेटे को मेरे लिये ज़बह कर दो। ख़लीलुल्लाह (अ0) को तअमीले हुक्म में क्या उज़्र, बेटे को इत्तिलाअ दी उन को भी तो नुबुव्वत से सरफ़राज़ होना था जुर्अते मरदाना कहये या उबूदीयते ख़ास्सा जवाब मिलता है "इफ़अल् मा तुअमरु सतजिदुनी इन्शाअल्लाहु मिनस्साबिरीन्0" (अब्बा जान आप को जो हुक्म हुआ है कर गुज़रये इन् शाअल्लाह मुझे सब्र करने वाला पाएंगें।) फिर क्या था दोनों महबूबाने रब राज़ी हो गये बेटे को पिछाड़ दिया गरदन पर छुरी चला दी, कोई मअमूली इम्तिहान तो न था। लेकिन गरदन न कटी अल्लाह की क़ुदरत से इस्माईल की जगह

पर दुंबा ज़ब्ह हो गया या दुंबा ज़ब्ह करने का हुक्म आ गया और दुंबा ज़ब्ह किया गया। अल्लाहु अक्बर! इस खुली आज़माइश में ख़्वाब को सच कर दिखाने के अमली इक़्दाम पर बेटे के बजाए दुंबा ज़ब्ह करने और इताअ़ते ताम्मा पर सवाब के बदले से नवाज़ करं एअ़लान आगया कि हम नेक लोगों को इसी तरह बदला दिया करते हैं। (37:105–110)

कअ़बे की तअमीर का हुक्म होता है, वह वक़्त भी क़ाबिले ज़िक्र है जब इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम अपने बेटे इस्माईल अ़लैहिस्सलाम के साथ कअ़बे की बुन्यादों पर दीवारें उठा रहे थे और दुआ़ करते जाते थे कि ऐ हमारे रब! हमारे इस अमल को क़बूल फ़रमा, बेशक तू बड़ा सुनने वाला और जानने वाला है। ऐ अल्लाह हम दोनों को अपना इताअ़त गुज़ार बन्दा बना और हमारी औलाद में से भी एक जमाअ़त को इताअ़त गुज़ार बन्दा बना और हम को ह़ज्ज का तरीक़ा सिखा दे और हमें बख़्श दे बेशक तू बड़ा बख़्शने वाला बड़ा मेहरबान है। और ऐ हमारे रब हमारी इस औलाद में से एक रसूल भेज जो लोगों को तेरी आयात सुनाए, तेरी किताब और हिक्मत की तअ़लीम दें, और इन का तज़्किया करे, बेशक आप ग़ालिब हिक्मत वाले हैं। (2:127–129)

यहाँ अल्लाह तआ़ला अपने ख़लील (अ0) से अपने ह़बीब की आमद की दुआ़ करवा रहा है। (अ़लैहिमस्सलातु वस्सलाम)

ह़ज्जेइब्राहीमी (अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम)

जब कअ़बे की इमारत तय्यार हो गई और बहुक्मे ख़ुदावन्दी तवाफ़ करने वालों, क़ियाम, रुकुअ़ और सुजूद करने वालों के लिये पाक व साफ़ घर तय्यार हो गया तो इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम को हुक्म हुआ कि वह एअ़लान कर दें कि लोग ह़ज्ज को आएं ताकि लोग पैदल और सवार हो कर आप के पास ह़ज्ज को आएं और अपने लिये दीनी व दुन्यावी फ़ाईदे ह़ासिल करें कुछ मुक़र्ररा दिनों में उन चौपायों को अल्लाह के नाम से ज़ब्ह करें जो अल्लाह ने रोज़ी के तौर पर उन को दिया है। पस तुम लोग उन के गोश्त खाओ और फ़क़ीरों को खिलाओ। फिर उनको चाहिये कि क़ुर्बानी के बअ़द नहा धो कर अपना मैल कुचैल साफ़ करें और जो नज़रें मान रखी हों उन को पूरा करें और ख़ान–ए–कअ़बा का तवाफ़ करें। (22:26–29)

ह़ज्जे इब्राहीमी कैसे होता था उस का पूरा इ़ल्म तो अल्लाह ही को है उस में से इतनी बातें बताई गई जो किताबुल्लाह में दर्ज हैं।

ह़ज्जे जाहिली :– फिर जब शैतान ने अपनी छूट से फ़ाइदा उठाते हुए लोगों को इस ह़द तक पहुंचा दिया कि लोग नंगे हो कर ख़ान–ए–कअ़बा का तवाफ़ करने लगे। ख़ान–ए–कअ़बा में बुत रख दिये– तौह़ीद के अ़लमबरदार शिर्क करने लगे क़ुर्बानी का गोश्त और ख़ून अपने गढ़े हुए मअ़बूदों को चढ़ाने लगे। जिसे हम ह़ज्जे जाहिली का नाम दे सकते हैं।

ह़ज्जे मस्तफ़वी (अ़लैहिस्सलाम)

जब इस्लाम आया तो ईमान वालों के सामने उन मुन्किरों की क़ुर्बानी का तरीक़ा था इस्लाम ने उस का रद किया और मुसलमानों को बताया गया कि तुम्हारी कुर्बानी का गोश्त और ख़ून अल्लाह को नहीं पहुचता न वहां इसकी ज़रूरत है वहाँ तो तुम्हारा तक़्वा पहुचता है कि तुम ने अल्लाह के हुक्म की इताअ़त करते हुए क़ुर्बानी दी यहाँ किसी को धोखा न हो कि मक़्सद तो तक़्वा है तो कुर्बानी क्यों की जाए तो मअ़लूम होना चाहिये कि तक़्वा नाम ही है हुक्म की बजा आवरी का, क़ुर्बानी का हुक्म है क़ुर्बानी किये बिना तक़्वा हासिल न होगा। रहा क़ुर्बानी का गोश्त तो कुछ चौपायों को अल्लाह ने पहले से ह़लाल कर दिया था उन्हीं की क़ुर्बानी की तो उन के लिये भी फ़रमा दिया कि उनका गोश्त खाओ और न मांगने वाले और मागने वाले फ़क़ीरों को खिलाओ। लोग नंगे होकर जो तवाफ़ करते थे उसे सख़्ती से मना किया और एह़राम की चादरें बांध कर तवाफ़ करो का हुक्म दिया गया। इस तरह से ह़ज्जे इस्लामी के अह़काम आए जो उसूली तौर पर क़ुर्आने मजीद में और तफ़्सीली तौर पर अह़ादीसे शरीफ़ा और फ़िक़्ह की किताबों में महफ़ूज.....

बाकी पेज 27 पर

क़ुरआन की शिक्षा

– मौलाना मु. मन्ज़ूर नोमानी

सच्चाई:–

तर्जमा:– ताकि अल्लाह तआला सच्चों को उन की सच्चाई का बदला और सिला दे और सज़ा दे मुनाफ़िक़ीन को अगर चाहे। (33:24)

सिद्क़ व सच्चाई के यह मानी (अर्थ) और इस का यह फैलाव और गहराई मालूम होने के बाद आप से आप यह बात मालूम हो जाती है कि जिन बन्दों को ईमान के साथ सिद्क़ व सच्चाई की यह सिफ़त पूरी तरह नसीब हो वे अल्लाह के कामिल तरीन (परिपूर्ण–परिपक्व) बन्दे हैं। और नबियों के सिवा उन से ऊँचा मक़ाम किसी का नहीं। इसी लिये क़ुरआने–मज़ीद में जहाँ अहले–ईमान के उन चार तबक़ों (वर्गों) का ज़िक्र किया गया है, जिन को अल्लाह तआला का ख़ास क़ुर्ब (संपर्क–समीपता) और मक़्बूलियत (मान्यता–स्वीकृति) व महबूबियत (प्रियतमता) का ख़ास मक़ाम हासिल है, और जिन पर अल्लाह तआला का ख़ुसूसी इनाम है; वहाँ नबियों के बाद दूसरे नम्बर पर "सिद्दीक़ीन" ही का ज़िक्र फ़र्माया गया है। इर्शाद है:–

तर्जमा:– और जो अल्लाह तआला की इताअत व फर्मा बरदारी करें वे (जन्नत में) अल्लाह के उन ख़ास बन्दों के साथा होंगे जिन पर अल्लाह का ख़ुसूसी इनाम है. यानी अम्बिया, सिद्दीक़ीन, शुह्दा और सालिहीन। और ये लोग बड़े ही अच्छे साथी हैं।(4:69)

सदाक़त (सत्यता) व सिद्दीक़ीयत (सत्य निष्ठता) की सिफ़त की बुलन्द मक़ामी का अन्दाजा इस से भी किया जा सकता है कि क़ुरआने मजीद में हज़रत इब्राहिम ख़लीलुल्लाह जैसे अज़ीम पैग़म्बर की तारीफ़ में फ़र्माया गया है कि उन में सिद्दीक़ियत की सिफ़त मौजूद थी। सूरए मर्यम में इर्शाद हुआ है:–

तर्जमा:– और इस किताब में इब्राहीम (अ) का हाल ज़िक्र करो, वे थे सिद्दीक़, नबी, इसी तरह इसी सूरए–मर्यम के इस से अगले रूकूअ में हज़रत इद्रीस अलैहिस्सलाम के मुतआल्लिक़ भी बिल्कुल यही शब्द फ़र्माये गये हैं। और इसी तरह हज़रत मर्यम (अ) की शान में भी बड़े से बड़ा तारीफ़ी (प्रशंसात्मक) कलिमा (शब्द) क़ुरआने–मजीद में यह फ़र्माया गया है।

"व उम्मुहू सिद्दीक़ा (हज़रत मसीह (अ) की माँ मर्यम "सिद्दीक़ा" थीं।)

इसी तरह क़ुरआने–मजीद का बयान है कि हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के जेल के उस साथी ने जो उन से बहुत प्रभावित और उन का बड़ा मोतक़िद (श्रद्धावान) हो गया था; उन को सिद्दीक़ ही की सिफ़त से पुकारा और कहा:–

(तर्जमा:– ऐ बड़े सादिक़ व रास्तबाज़ यूसुफ़।) (12:46)

फिर इस से भी बड़ी बात यह है कि क़ुरआने–मजीद में सिदक़ और सच्चाई को अल्लाह तआला की भी सिफ़त बताया गया है। बल्कि फ़र्माया गया है कि वह सब से बड़ा सच्चा है:–

तर्जमा:– और अल्लाह से ज़ियादा कौन सच्चा हो सकता है क़ौल (वचन) में? (कोई नहीं) (4:122)

तर्जमा:– और कौन अल्लाह से ज़ियादा सच्चा हो सकता है बात में? (कोई नहीं) (4:87)

सिद्क़ और सच्चाई की सिफ़त की यह अज़्मत और अहमियत (महत्त्व) मालूम हो जाने के बाद खुद ही समझा जा सकता है कि अल्लाह तआला के यहाँ इस सिफ़त का कितना बड़ा दर्जा है, और इस का कैसा अज़ीम बदला मिलने वाला है। फिर भी क़ुरआने–मजीद की चन्द आयतें इस सिल्सिले में भी पढ़ लीजिये:–

अभी सब्र के बयान में सूरए आलि–अिम्रान की वह आयात ज़िक्र की जा चुकी है जिस में जन्नती बन्दों के औसाफ़ व अख़्लाक़ बयान

करते हुये सब से पहले उन की सिफ़ते–सब्र और सिद्क़ ही का ज़िक्र किया गया है:–

तर्जमः– सब्र करने वाले, सच्चे और रास्त बाज़ और अल्लाह के फ़र्मा बरदार बन्दे। (3:17)

और सूरए– अह्ज़ाब में ईमान वाले बन्दों और बन्दियों के लिये जिन सिफ़तों पर अल्लाह की ख़ास मग़फ़िरत और अज्रे–अ़ज़ीम (बहुत बड़ा अज्र) की बशारत सुनाई गयी है उन में ईमान व इस्लाम और अल्लाह की फ़र्मा बरदारी के बाद सब से पहले उन की सदाक़त और सच्चाई की सिफ़त ही का ज़िक्र किया गया है। इर्शाद है :–

तर्जमाः– इस्लाम व ईमान लाने वाले बन्दे और बन्दियाँ और अल्लाह की फ़र्मा बरदारी करने वाले बन्दे और बन्दियाँऔर सिद्क़ व सच्चाई की सिफ़त रखने वाले बन्दे और बन्दियाँ। (33:35)

आगे उन की चन्द और सिफ़तो को बयान फ़र्माने के बाद उन को बशारत सुनाई गयी है कि:–

तर्जमाः– अल्लाह तआला ने उन के लिये मग़्फ़िरत (का फ़ैसला फ़र्माया है) और अज्रे–अ़ज़ीम तैयार करके रखा है।

और सूरए– मॉइदा के आख़री रूकूअ़ में क़ियामत के दिन के बारे में इर्शाद हुआ है:–

तर्जमाः– यह वह दिन है कि नफ़ा देगा सादिक़ीन को यानी सच्चों को उन का सिद्क़ (सच) और उन की रास्त बाज़ी। उन के लिये जन्नतें हैं, जिन के नीचे नह्रें जारी (बह रही) हैं। वे उन में हमेशा–हमेशा रहेंगे। उन का अल्लाह उन से राजी और वे अपने अल्लाह से खुश। यह बड़ी शान वाली कामयाबी है।" (5:119)

कुरआने–मजीद ने सादिक़ीन को मग़्फ़िरत व जन्नत और अज्रे–अ़ज़ीम और रिज़ा–ए–इलाही की ये रूह पर्वर बशारतें सुना कर अस्ल में एक ख़ास अन्दाज़ से सिद्क़ व सच्चाई की बहुत ही असर करने वाली दावत और दिलकश तरग़ीब दी है।

वफ़ा–ए–अह्द (वचन पालन)

अह्द (प्रतिज्ञा) का पूरा करना भी अस्ल में सिद्क़ और सच्चाई ही की एक ख़ास शक्ल है। बल्कि कुरआने–मजीद में चन्द जगहों पर तो इसके लिये सिद्क़ ही का शब्द लाया गया है।

सूरए अह्ज़ाब में इर्शाद है:–

तर्जमाः– ईमान वालों में कुछ लोग वे हैं जिन्हों ने अल्लाह तआला से जो अहद किया था उस में वे सच्चे उतरे। (33:23)

इस आयत में वफ़ा–ए–अहद को सिद्क़ ही के शब्द से अदा किया गया है। बहरहाल यह सिद्क़ की एक ख़ास क़िस्म है। लेकिन कुरआने–मजीद में च्योंकि इस का मुतालबा (माँग) वफ़ाए– अह्द और वफ़ाए–अ़क्द के एक अलग उन्वान से किया गया है, इस लिये हम ने भी यही मुनासिब (उचित) समझा कि इस सिल्सिले के कुरआने मजीद के इर्शादों को एक अलग उन्वान के अंतर्गत ज़िक्र करें।

सूरए– मॉइदा की सब से पहली आयत जिस से यह सूरः शुरू होती है, सुनिये। इर्शादः–

तर्जमाः– ऐ ईमान वालो! तुम्हारे जो अ़हद–मुआ़हिदे और जो मुआ़मिले हों, उन को पूरा करो। (5:1)

और सूरए–बनी इस्राईल में फ़र्माया गया है:–

तर्जमाः– अ़ह्द को पूरा करो। बेशक अह्द के बारे में (क़यामत के दिन) पूछ–ताछ होगी। (17:34)

वफ़ाए–अ़ह्द की इस सरीह (स्पष्ट) दावत व तालीम और इस तरह के सीधे मुतालबे के अ़लावा इस की तरग़ीब कुरआने–मजीद में इस तरह भी दी गयी है कि अ़हद के पूरा करने वालों को जगह–जगह जन्नत की और आख़िरत की कामयाबी की और अल्लाह तआ़ला की रिज़ा की बशारत सुनाई गयी है।

सूरए– बक़रह् के बाईसवें रूकूअ़ की उन आयतों का ज़िक्र अभी ऊपर सिद्क़ के बयान में हो चुका है, जिन में अल्लाह तआ़ला के नेक और मुत्तक़ी बन्दों के औसाफ़ बयान किये गये हैं। वहाँ एक ख़ास सिफ़त उन की यह भी बयान हुयी है:–

तर्जमाः– और वे बन्दे जो पूरा करने वाले हैं अपना अ़ह्द जब वे अ़ह्द करें। (2:177)

❑❑

प्यारे नबी की प्यारी बातें

—अमतुल्लाह तसनीम

उम्मत के तबके

हजरत इम्रान बिन हुसैन से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, तुममें सबसे अच्छी वह नस्ल है जो इस वक़्त मेरे साथ मौजूद है। फिर जो इनके बाद आनेवाली नस्लें हैं। फिर जो उनके बाद आनेवाली नस्लें हैं। हज़रत अिम्रान (र0) कहते हैं कि मुझे याद नहीं की आपने दो मर्तबा फ़रमाया या तीन मर्तबा। फिर उनके बाद ऐसे लोग आयेंगे जो गवाही देंगे, हालाँकि उनसे गवाही नहीं तलब की जायेगी। और खियानत करेंगे और एतिबार न किया जायेगा। और नज़र मानेंग लेकिन पूरी न करेंगे। और उनमें मोटापा ज़ाहिर होगा।

खर्च करने के उसूल

हज़रत अबू उमामः (र0) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, ऐ आदम के बेटे! अगर तू फ़ाज़िल चीजें ख़र्च कर डालेगा तो तेरे लिए बेहतर होगा। और अगर तू उसे रोक रक्खेगा तो यह तेरे लिए बुरा होगा। हाँ बक़दरे ज़रूरत रखने पर तुझे कोई मलामत न की जायेगी। और पहले उस शख़्स से इब्तिदा कर जिसका तू कफ़ील है।

दुनिया की खुशनसीबी

हज़रत उबैदुल्लाह (र0) बिन मुहसिन से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जो शख़्स अपने घर में इत्मीनान से है, तन्दुरुस्ती और उसके पास पूरे दिन की रोज़ी है, तो गोया दुनिया का पूरा ऐश और ज़िन्दगी की सब निअमतें उसको हासिल हैं। (तिर्मिज़ी)

हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि0) बिन अम्र बिन अलआस से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, वह बड़ा खुशनसीब है जिसको इस्लाम की दौलत नसीब हुई, और उसके पास बक़दर ज़रूरत रिज़्क़ भी है। अल्लाह ने जो कुछ उसको अता फ़रमाया उसपर उसको क़ानिअ बना दिया। (मुस्लिम)

हज़रत फ़ुज़ालः (रज़ि0) बिन उबैद से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, खुशनसीब है वह जिसको इस्लाम की तौफ़ीक़ मिली, और उसको बक़दरे ज़रूरत ज़िन्दगी का सामान हासिल है, और वह उसपर क़ानिअ है। (तिर्मिज़ी)

रातों का फ़ाक़ः

हज़रत इब्नि इब्बास (रज़ि0) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके घर वाले मुतवातिर कई रातें ख़ाली पेट गुज़ारते थे कि रात का खाना मैस्सर न आता था। और उनकी रोटियाँ जौ की होती थीं। (तिर्मिज़ी)

फ़ाक़ः की फ़ज़ीलत

हज़रत फ़ुजालः (रज़ि0) से रेवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब लोगों को नमाज़ पढ़ाते तो लोग भूक की वजह से नमाज़ में गिर-गिर पड़ते और वह असहाबे सुफ़्फ़ः थे। देहाती कहते थे कि यह मजनूँ हैं। जब आप नमाज़ पूरी करते और उनकी तरफ़ फिरते तो फ़रमाते कि अगर तुमको मालूम हो जाये कि अल्लाह तआला के यहाँ तुमको क्या-क्या निअमतें मिलेंगी तो तुम अपनी इस हालत (फ़क़्र व तंगी) को और भी पंसन्द करने लगो। (तिर्मिजी)

आदमी के लिए कितना खाना जरूरी है

हज़रत मिक़दाद बिन मअदी करिब (रज़ि0) से रिवायत है कि

मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना है कि आदमी ने किसी बर्तन को पेट से बदतर नहीं भरा। आदम के बेटे को इतना खाना काफ़ी है कि उसकी पीठ सीधी रहे। अगर उसके बाद भी कुछ ज़रूरी है तो एक तिहाई उसके खाने के लिए और एक तिहाई उसके पीने के लिए और एक तिहाई उसकी साँस के लिए। (तिर्मिजी)

सादगी व जफ़ाकशी

हज़रत अयास (रज़ि0) बिन सअलबः अल्अन्सारी से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथियों ने एक दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने दुनिया का ज़िक्र किया। आपने फरमाया, सुनो सुनो, सादगी ईमान है।

जिहाद में ग़ैबी दावत

हज़रत जाबिर (रज़ि0) बिन अब्दुल्लाह (रज़ि0) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कुरैश के क़ाफ़ले से मुकाबले के लिए भेजा। और हज़रत अबू अुबैदः (रज़ि0) को हमारा अमीर किया और एक थैला खजूर का ज़ादे राह दिया। हज़रत अबू अुबैदः (रज़ि0) रोज़ हमको एक–एक खजूर देते थे। इसके सिवा और कुछ था ही नहीं। लोगों ने अर्ज़ किया, आप लोग कैसे एक–एक खजूर पर बसर करते थे? कहा, हम उसको इस तरह से चूसते थे जैसे बच्चा चूसता है। फिर उसपर पानी पी लेते थे तो हमको एक दिन और एक रात तक काफ़ी होता था। और दरख़्त पर लकड़ी मारकर पत्ते गिरा लेते, फिर पानी से घिस कर खाते थे। एक दिन समन्दर के किनारे–किनारे चले तो हमको समन्दर के किनारे पर एक बड़ा टीला दिखाई दिया। जब उसके पास पहुँचे तो देखा कि वह एक जानवर है जिसको अम्बर कहते हैं। हज़रत अबू उबैदः (रज़ि0) बोले, यह मुरदार है। और कहा कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के भेजे हुए हैं और अल्लाह के रास्ते में हैं और तुम सब मुज्तर (मजबूर व परेशान हो गये,) पस खाओ। हम उसको एक महीना तक खाते रहे और हम सब तीन सौ थे। हम लोग उसको खाकर मोटे हो गये। उसकी आँखों में घड़ा डिबोकर चर्बी निकालते थे। और गाय के टुकड़ों की तरह उसके टुकड़े काटते थे। हज़रत अबू उबैदः (रज़ि0) ने फौज से तेरह आदमी लिये, उसकी आँख के गढ़े में बिठा दिया और उसकी पसली लेकर उसको खड़ा किया। फिर एक बड़े ऊँट पर कजावः कसकर उसको उसके नीचे से गुज़ार दिया। हमने नाश्ते के लिए पार्चे बनाये फिर मदीना आये। जब हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आये और आपसे इसका ज़िक्र किया तो आप ने फरमाया। अगर तुम्हारे पास उसका कुछ गोश्त हो तो हमको खिलाओ। फिर हमने आपको भेजा तो आपने खाया। (मुस्लिम)

❑❑

इस्लामी जीवन व्यवस्था

अजर व अमर नहीं हैं, अगर इस मिट जाने वाली दुनिया में कोई चीज बाकी रहने वाली है तो वह सिर्फ़ नेकी है।

इस जीवन काल में इन्सान को यह समझ कर प्रयास करना चाहिये कि मेरा हर काम, मेरी हर हरकत अपना एक नतीजा रखती है। आने वाली जिन्दगी में अच्छा या बुरा जो कुछ भी मिलेगा वह मेरी यहां की कोशिश और मेरे यहां (सांसरिक जीवन) के कर्म का फल होगा।

(सामार 'तामीरे हयात' लखनऊ 10,25 अक्टूबर 2008)

❑❑

एलान

पीछे एलान किया गया था कि कादियानियत के फित्ने से बचने के लिए 50 रु0 में तीन किताबें भेजी जायेंगी इस सिलसिले में कई मनी आर्डर आ गये लेकिन अभी किताबें प्रेस में हैं, अब बकरीद के बाद ही भेजी जा सकेंगी।

अनुरोध

लेखकों से अनुरोध है कि वह स्पष्ट तथा सरल लिखें। पाठकों से अनुरोध है कि वह जब तुब एक कार्ड द्वारा सूचित करें कि उन को सच्चा राही कैस लगा।

(सम्पादक)

किस्त : दस

कारवाने ज़िन्दगी

आप बीती

मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली हसनी

वालिद साहब की वफ़ात

15.05.1341 हिज्री (2 फरवरी, 1923) जुमा का दिन था कि लखनऊ का यह दौर और उम्र बल्कि अपने छोटे से इस खानदान के इतिहास का सुनहरा पन्ना अचानक पलट गया, और घर की बिसात ही उलट गयी, वालिद साहक का थोड़ी देर की बीमारी के बाद इन्तेकाल हो गया। इस को तक़दीरी बात कहिये कि उस वक़्त उनके पास तनहा मैं ही नौ दस वर्ष का बच्चा था। वालिद साहब ने इन्तेकाल से थोड़ी देर पहले सन्तरे मंगवाये (ग़ालिबन तस्कीन व फरहत हासिल करने के लिये) जब वह सन्तरे आये तो बजाय खुद खाने के मेरी तरफ इशारा किया कि इसको दे दो। मेरी खुश किस्मती कि मैंने बिना किसी की हिदायत या उनके इशारे के उनके पाँव दबाने शुरू किये। उनका जप जारी था। आवाज बन्द होने पर बहनों को तशवीश (चिन्ता) हुई। मेरे उस्ताद मोलवी महमूद अली साहब जुमा की छुट्टी ख़त्म करके जो अपने घर झवाई टोला में गुज़ारते थे, वापस आ गये थे, और एक हकीम साहब और वालिद साहब के एक दोस्त भी आ गये। और इस बात की तस्दीक़ हो गयी कि वह इस मिट जाने वाले संसार में नहीं रहे। यह ख़बर बिजलीं की तरह सारे शहर में दौड़ गयी, और प्रियजनों के आने का ताँता बन्ध गया। वह नीचे मतब (मरीज देखने का कमरा) में बैठे थे और उनकी हमदर्दी और दिलजोई का केन्द्र एक कमसिन बच्चा था, जो इसके समझने से क़ासिर था कि दफ़अतन यह क्या हो गया, यह ताज़ियत (शान्त्वना) करने वाले किस मर्तबे और हैसियत के लोग हैं, और इनका किस तरह जवाब देना चाहिये? कभी कोई शफ़क़त (स्नेह) से अपने पास बिठा लेता, कभी कोई सीने से लगा लेता कोई सर पर मुहब्बत का हाथ फेरता, आँखों में आँसू और दिलों में बेचैनी थी। जो इस ताज़ियत का सबसे ज़्यादा पात्र था, वह यहाँ से एक हज़ार मील पर (मद्रास में) था और इस पूरी घटना से बेख़बर था। इसके बाद जो कुछ हुआ उसकी तफ़सील "हयात अब्दुल हयी" में पढ़ी जा सकती है।

भाई साहब के स्नेह व सरपरस्ती का दौर

भाई साहब जिन्होंने यह ख़बर संयोग से अपने एक दोस्त से सुनी थी, जब लखनऊ वापस हुए और रायबरेली पहुँचे तो सीधे क़ब्र पर गये, मैं भी साथ हो लिया, उनका क़ब्र पर बच्चों की तरह फूट–फूट कर रोना इस समय आँखों के सामने है और कल की बात मालूम होती है, बस उसी समय से उनके अन्दर हम सब लोगों ने एक इन्क़लाब महसूस किया, अब वह मेरे बड़े भाई न थे, जो अपनी तालीम की तकमील में रत और के क़िस्सों से बे तअल्लुक़ थे, अब वह हम छोटे भाई बहनों के शफ़ीक़ बाप वाल्दा साहिबः के एक सआदतमन्द बेटे बल्कि ख़ादिम थे उनमें माँ बाप दोनों की शफ़क़त थी। यहाँ पर वालिद साहब के दोस्तों में से सिर्फ नवाब सैयद अली हसन खाँ के उस ताज़ियतनामे की चन्द सतरें पेश की जा रही हैं, जो उन्होंने मेरे नाम लिखा था और इसमें मेरी उम्र की पूरी रियायत है :–

" तुम अपने दिल में यह ख्याल न करो कि बाबा नहीं हैं, (मैं अपने वालिद को बाबा ही कहता था) तो हम क्यों कर और किस तरह पढ़ेंगे। मैंने सुना है कि तुम परेशान होकर लोगों से यह कहते हो, खुदा के फ़ज़ल से तुम्हारे बड़े भाई जो बड़े क़ाबिल बड़े फ़ाज़िल हैं, तुम्हारी तालीम का बहुत अच्छा इन्तेज़ाम करेंगे, अलावा इसके इस समय सब लोगों की निगाहें तुम्हारी तरफ़ हैं, अतः तुम हरगिज़ हरगिज़ न घबराओ, खुदा चाहेंगे तो तुम बहुत अच्छी तरह और बड़े आराम व आसाइश से पढ़ोगे, आख़िर में दुआ करता हूँ

कि खुदा तुम्हारी उम्र दराज़ करे कि खानदान का नाम रोशन करो।"

तकिया का उबूरी क़याम और वालिदा साहिबः की तरबीयत

वालिद साहब के इन्तेक़ाल के बाद हमारे ख़ानदान के लखनऊ में रहने का कोई सुवाल न था। मतब और नदवा की निज़ामत दोनों वालिद साहब के साथ गयीं। भाई साहब मेडिकल कालेज के चौथे साल में थे। घर में कोई जायदाद और ज़रिया आमदनी न थी। इसलिये खुद उन की तालीम की तकमील और लखनऊ के क़याम में कठिनाई थी। अल्लाह तआला ने नवाब नूरुल हसन खाँ साहब मरहूम की बेगम साहिबः और उन के बेटों सैयद ज़हूरुल हसन, सैयद नजमुल हसन साहिबान को अपने शायाने शान बदला दे और उनकी क़ब्रों को नूर से भरे कि उन्हों ने अज़ीज़ों से बढ़कर मुहब्बत और तअल्लुक़ का सुबूत दिया और अपनी कोठी पर क़याम की पेशकश की, लखनऊ का मकान जो शुरू में किराये पर था, छोड़ दिया गया था, होस्टल का ख़र्च हमारी सकत से बाहर था। भाई साहब ने इस पेशकश को क़बूल किया। एकान्त में पढ़ाई करने के लिये इन हज़रात ने अपनी आलीशान कोठी का एंक हिस्सा जो कोठी से अलग भी था, भाई साहब के हवाले कर दिया जहाँ वह लाइब्रेरी भी आ गयी जो बाज़ार झाऊलाल के मकान में अभी तक अमानत थी इस खानदान ने तालीम पूरी होने तक भाई साहब को अपना मुस्तकिल मेहमान बल्कि खानदान का फर्द बना लिया और उनमें और अपनी अज़ीज़ औलाद में कोई फर्क नहीं रखा। वालिदा साहिबा, बहनें और मैं वालिद साहब की वफात ही की रात में रायबरेली शिफ्ट हो गये थे।

मेरी फारसी तालीम का सिलसिला जारी था लखनऊ में जो मोल्वी साहब पढ़ाते थे वह वहीं रह गये। यहाँ मैंने अपनी फारसी तालीम भाई साहब की हिदायत से जारी रखी। चचा मोहतरम सैयद मुहम्मद इस्माईल साहब अच्छे फारसी दाँ थे। उनसे बोस्ताँ पढ़ता था। हिसाब सिखाने और उर्दू इबारत नवीसी (उर्दू गद्य लेखन) के अभ्यास के लिये क़रीबी गाँव लोहानी पूरा से मास्टर मुहम्मद ज़माँ खाँ साहब आते थे जो उस मौजः के शरीफ पठानों में से थे और अदालत रायबरेली में मुलाज़िम थे। मेरे बड़े मामूज़ाद भइयों ने भी अपने अपने समय में उनसे पढ़ा था। ख़ालू मोहतरम मोल्वी हाफ़िज़ सैयद उबैदुल्लाह साहब ने मेरे ट्यूशन का इन्तेज़ाम कर दिया था।

घर में किसी बड़े मर्द के न होने से वालिदा साहिबा ही मेरी निगरानी, अख़लाकी व दीनी तरबियत की ज़िम्मेदार थीं। मुझे कुरआन मजीद की बड़ी बड़ी सूरतें उन्होंने ने इसी ज़माने में याद करायीं। बावजूद इसके कि उनकी शफ़क़त ख़ानदान में मशहूर थी और वालिद साहब के इन्तेक़ाल की वजह से वह मेरी दिलदारी और एक हद तक नाज़बरदारी कुदरतन दूसरी मांओं से ज्यादा करती थीं, लेकिन दो बातों में बहुत सख्त थीं। एक तो नमाज़ के बारे में मुतलक तसाहुल नहीं रखती थीं, मैं इशा की नमाज़ पढ़े बग़ैर कभी सो गया, चाहे कैसी ही गहरी नींद हो उठाकर नमाज़ पढ़वातीं, और नमाज़ पढ़े बगैर हरगिज़ सोने न देतीं। इसी तरह फज्र की नमाज़ के वक़्त जगा देतीं और मस्जिद भेजतीं, और फिर कुरआन मजीद की तिलावत के लिये बिठा देतीं। दूसरी बात, जिसमें वह तनिक रियायत न करतीं, और उसमें उनकी ममता रूकावट न बनती, यह थी कि अगर मैं खादिम के लड़के या कामकाज करने वाले बच्चों के साथ कोई ज्यादती, नाइन्साफी करता या हिक़ारत और गुरूर के साथ पेश आता तो वह न सिर्फ मुझ से माफ़ी मँगवातीं बल्कि हाथ तक जुड़वातीं। इसमें मुझे कितनी ही अपनी ज़िल्लत (अपमान) महसूस होती मगर वह इसके बिना न मानतीं। इसका मुझे अपनी ज़िन्दगी में बहुत फ़ायदा पहुँचा, और जुल्म व घमण्ड व गुरूर से डर मालूम होने लगा, और दिलआज़ारी और दूसरों के अपमान को महापाप समझने लगा। इस की वजह से मुझे अपनी गलती का इक़रार कर लेना हमेशा आसान मालूम हुआ। वालिदा साहिबा की तरबीयत को इस अन्दाज़ का ज़िक्र करते हुए एक तजरबः और मशविरे के तौर पर इस का भी जिक्र कर देने को जी चाहता है कि बच्चों को मज़हबी व अख़लाक़ी उठान

और उनके इस क़ाबिल होने में कि अल्लाह तआला की उनसे अपने दीन की कोई खिदमत ले, दो चीज़ों का बड़ा दखल है। एक यह कि वह अपनी उम्र के मुताबिक जुल्म और दिलआज़ारी से सुरक्षित व महफूज रहें, और किसी दुखे दिल की आह या मज़लूम की कराह उनके भविष्य पर असर न डाले दूसरे यह कि उनका खाना ग़सब व हराम व सन्देह प्रदान से पाक रहे। बज़ाहिर अल्लाह ने इस आजिज के साथ इन दोनों चीज़ों का इन्तेज़ाम फ़रमाया। मेरा दाधियाल जायदाद व इमलाक और मुशतरक माल व हुकूक से अर्सः से महफूज था। वालिद साहब की आमदनी ख़ालिस तिब्बी पेशे की रहीने मिन्नत थी, (आभारी थी।) वैसे भी अल्लाह ने न सिर्फ सन्देह प्रद माल से बचाया बल्कि बिदआत व रसूम के खानों से भी।

इस लिससिले में एक घटना याद आ गयी। मैं अपने घर की एक बड़ी बूढ़ी अन्ना के साथ जो पढ़ी लिखी न थीं, अपनी फूफी के पास खालिसहाट (रायबरेली का एक मुहल्ला) जा रहा था। रास्ते में कहीं गरीबों को खाना खिलाया जा रहा था (जो चालीसवें या सदक़ः का खाना था)बड़ी बी ने जिनके साथ मैं जा रहा था वह खाना लिया, और वहीं बैठकर खाने लगीं। मैं बच्चा था, मेरे मुंह में पानी भर आया और मैंने शिरकत करनी चाहि उन्हों ने कहा, बेटा यह तुम्हारे खाने का नहीं, और उन्होंने मुझे खाने नहीं दिया। यह ग़ालिबन घर के माहौल और एहतियात की उस फ़ज़ा का नतीजा था जिसको वह देखा करती होंगी।

उसी ज़माने में हमारे खानदान में बड़ा अच्छा दस्तूर था कि जहाँ कोई ऐसा ग़मनांक वाक़्या पेश आता, दिल दुखे हुए होते, या कोई परेशानी की बात होती तो समसामुल इस्लाम सुनी जाती। मशहूर इतिहासकार वाक़िदी की मशहूर किताब "फ़ुतुहुश्शाम" का पचीस हज़ार अशआर में तर्जमः है। यह तर्जमः और नज़्म हमारे ही खानदान के एक बुज़ुर्ग मुंशी अब्दुर्रज़्ज़ाक़ साहब कलामी की लिखी हुई है। उत्तेजना और जोश से भरी हुई, दर्द व असर में डूबी हुई जंग का नक़शा ऐसे खींचा कि दिल जोश से उछलने लगते हैं। शहादत का ज़िक्र इस तरह करते हैं कि खुद खुदा की राह में जान देने के लिये दिल बेताब हो जाता है। और सहाबः किराम और मुजाहिदीन के ग़म के सामने आदमी अपना ग़म भूल जाता है। मेरी बड़ी खाला मरहूमः स्वालेहा बी जो कुरआन मजीद की भी हाफ़िज़ थीं यह मंजूम फ़ुतुहुश्शाम बड़े पुर असर और दिलकश लहजे में पढ़ती थीं। उमूमन अस्र के बाद यह मजलिस होती, और बच्चे भी कभी बेइरादा और कभी इरादा के साथ आजाते और कुछदेर ठहर कर सुनते और कभी मायें अपने पास बिठाकर सुनने का मौक़ा देतीं। (जारी)

❑❑

इसलाहे मुआशरा .....

बअ़द भटकने का एहसास ही न हो तो आदमी न जाने कहां पहुंच जायेगा, उस को मंजिल न मिल सकेगी। उलमा ने किताब व सुन्नत की रौशनी में तौबा की तीन शरतें बयान की हैं।

(1) गुनाह फौरन छोड़ दे। (2) एहसासे नदामत पैदा हो। (3) दोबारा गुनाह न करने का अज़्म हो। जो गुनाह हुकूकुल इबाद से मुतअल्लिक हैं उन में चौथी शर्त भी जरूरी है कि अगर उस ने हक अदा न किया हो तो अदा करे, मसलन किसी की अमानत उस के पास है अमानत रखने वाला तकाजा कर रहा है तो फिर बिगैर ताखीर के अमानत वापस दे। मीरास में किसी और का भी हक रहा है तो हिसाब लगा कर उस का हिस्सा वापस दे। कारोबार में शिरकत है तो हर **शरीक को उस** का हक मिलना चाहिए गरज एक पैसा भी दूसरे का अगर अपने माल में शामिल हो गया है तो यह नजिस कतरा है जो पूरे माल को नजिस कर रहा है, जितनी जल्दी मुमकिन हो उसे हक वाले तक पहुंचा कर अपने माल को पाक कर लिया जाये।

❑❑

अगर आप को कुर्बानी करना है तो आप के लिये बेहतर है कि पहली जिलहिज्ज से कुर्बानी करने तक न बाल काटें न नाखुन, सवाब मिलेगा।

सफ़ाई सुथराई और उसके आदाब

अल्लामा सैयद सुलेमान नदवी
अनुवाद नजमुस्साकिब अब्बासी गाजीपुरी

संस्कृति व शालीनता की बातों में सबसे प्रमुख पवित्रता है। सदियों पहले इस्लाम एक ऐसे देश में प्रकट हुआ जहां पानी आमतौर पर बहुत कम था फिर भी उसने कतिपय खास हालात में स्नान करना अनिवार्य कर दिया। पति–पत्नी के सम्भोग के बाद जब तक दोनों स्नान न कर लें नमाज जो अनिवार्य है सही नहीं हो सकती कुरआन में है " और अगर तुम नापाक हो तो नहा कर पाक हो।" (सूरह माइदहः) कपड़े जो पहने है इस्लामी कानून के अनूसार पाक हों, अल्लाह ने कहाः " और अपने कपड़ों को पाक कर" (सूरह मुद्दस्सिरः)

अगर पाकी (पवित्रता) प्राप्त करने के लिये पानी न मिल सके या बीमारी के कारण पानी उपयोग करने से नुकसान का भय हो तो पवित्र मिट्टी से "तयम्मुम" करना चाहिए" तो पवित्र मिट्टी का इरादा करो" (सूरह माइदह) जब नमाज पढ़ना चाहें तो पहले हाथ, मुंह और पैर धोलें और भीगे हाथों को सर पर फेर लें, इस का नाम वुजू है। कुरआन में है "जब नमाज का इरादा करो तो अपने मुंह और कुहनियों तक अपने हाथ धो लो और अपने सरों का मसह करो और अपने पैरों को धाओ" (सूरह माइदह) जुमा के निद नमाज से पहले नहाने का आदेश दिया कि लोग पाक साफ और नहा धो कर नमाज में शामिल हों ताकि किसी की गन्दगी और दुर्गन्ध से दूसरे नमाजियों को तकलीफ न हो और पूरी भीड़ पवित्रता और सफाई का मनोहर चित्र हो। शौच के बाद उस विशेष अंग व स्थान से गन्दगी दूर करना अनिवार्य ठहराया गया।

इन आदेशों से ज्ञात हुआ कि इस्लाम में साफ–सफाई को विशेष स्थान प्राप्त है बल्कि वह अल्लाह के प्रेम को प्राप्त करने का माध्यम है। अल्लाह ने फरमाया "और (अल्लाह) पवित्र रहने वालों से प्रेम करता है" (सूरह बकरह) इसमें पवित्रता का पालन और हृदय में पवित्रता का ध्यान पैदा करने के लिये विभिन्न प्रकार की विधि सिखाई गई है उदाहरणतः

1. हजरत मुहम्मद (सल्ल0) ने फरमाया "जब कोई व्यक्ति सोकर उठे तो जब तक तीन बार हाथ न धोले उसको पानी के बरतन में हाथ नहीं डालना चाहिए क्योंकि सोने में मालूम नहीं कि उसका हाथ कहाँ–कहाँ पड़ा है" (मुस्लिम) इस हदीस से मालूम हुआ कि हमको अपने शरीर के हर अंग की पवित्रता का सोते–जागते हर स्थिति में ध्यान रखना चाहिए। सोने में किसी सपने के कारण भी अगर आदमी नापाक हो जाए तो नहाना अनिवार्य है (अबूदाऊद) हाथ की सफाई पर इसलिए जोर दिया गया है कि बर्तन से पानी निकालने में नापाक हाथ पानी में भीग कर पानी को अपवित्र न कर दे। इसलिए ध्यान देना चाहिए कि हाथ पानी के बर्तन में उस समय तक न डुबोए जाएं जब तक हाथों की पवित्रता का विश्वास न हो।

2. दांतों की सफाई जो बहुत सी गन्दगियों और बीमारियों की जड़ है आवश्यक बताया मिसवाक करना सुन्नत ठहराया और फरमाया "अगर मेरी उम्मत पर भारी न होता तो मैं हर नमाज के समय मिसवाक करने का आदेश देता" (अबूदाऊद) एक बार कुछ मुसलमान उनके समक्ष उपस्थित हुए जिनके दांत साफ न होने के कारण पीले थे तो हजरत मुहम्मद (सल्ल0) ने फरमाया "तुम्हारे दांत पीले क्यों देख रहा हूं? मिसवाक किया करो" (मुसनद अहमद)

3. आम रास्तों और बृक्षों की छांव में शौच नहीं करना चाहिए (अबूदाऊद) इसलिये कि रास्ता चलने वालों और बृक्ष की छांव में बैठने वाले राहगीरों को इस गन्दगी से तकलीफ न हो।

4. ठहरे हुए पाने में पेशाब

करके फिर उसमें स्नान करना जायज नहीं है। ऐसे ही ठहरे हुए पानी में सम्भोग के पश्चात नहाना नहीं चाहिये बल्कि उस से पानी लेकर अलग स्नान करें क्योंकि हमारी थोड़ी सी लापरवाही से वह पानी दूसरों के लिये अपवित्र बल्कि आम हालत में स्वयं की तबीयत के लिए घिन पैदा करेगा।

5. आमतौर से अकारण खड़े होकर पेशाब नहीं करना चाहिये क्योंकि इस हालत में ये भय है कि पेशाब की छींटे शरीर पर पड़ जाएं। इससे नग्नता का अन्देशा भी रहता है और ये संस्कृति व शालीनता के विरुद्ध भी है। अगर ये शंकाएं न हों या ज़मीन बैठने के योग्य न हो तो जायज है।

6. पेशाब नर्म ज़मीन पर करना चाहिए क्योंकि कठोर जमीन से पेशाब के छींटे उड़कर शरीर पर पड़ सकती हैं।

7. स्नानघर की ज़मीन पर पेशाब नहीं करना चाहिए विशेषतः जबकि वह कच्ची हो क्योंकि जगह की गन्दगी और नापाकी से पानी की छींटें गन्दी और नापाक होकर उड़ेंगी और शरीर को अपवित्र करेंगी या नापाक होने की शंका मन में पैदा करेंगी।

8. शौच के बाद इस्तिन्जा करना चाहिये। ढ़ेले या किसी और पवित्र व शोषक वस्तु से सफाई के बाद पानी से धो लेना अच्छा है। इस्तिन्जा बाएं हाथ से किया जाये उसमें दाहिना हाथ न लागाया जाए।

9. तहारत (पवित्रता) के बाद पानी के अलावा मिट्टी से भी हाथ धोना चाहिये।

10. सप्ताह में एक दिन हर मुसलमान पर स्नान करना, कपड़े बदलना, इत्र और तेल लगाना उत्तम है बल्कि कतिपय इस्लामी बुद्धिजीवी व विद्वानों के अनुसार हदीस के शब्दों के बुनियाद पर नहाना अनिवार्य है।

इस्लाम ने इसके लिये जुमा का दिन तय किया है जो मुसलमानों के इकट्ठे होने का आम दिन है। उसका कारण हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रजि० ने बताया कि अरब के लोग बहुत गरीब थे और मेहनत मजदूरी करते थे। उनकी मस्जिद अत्यधिक तंग और उसकी छत बहुत नीची थी जो छप्पर की थी। एक बार गर्मी के दिन में हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) जुमे की नमाज़ पढ़ने के लिये आए तो लोगों को गर्मी के कारण खूब पसीना आया और उसकी गंध फैलने से हर व्यक्ति को तकलीफ हुई हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने इस दुर्गन्ध से लोगों को पीड़ित होते देखा तो फरमाया कि लोगो जब ये दिन आए तो नहा लिया करो और हर व्यक्ति को जो बेहतरीन तेल और इत्र उपलब्ध हो सके लगाए (अबूदाऊद)। जुमे के अलावा मामूलन किसी को गन्धित वस्तु जैसे लहसुन या प्याज खाकर मस्जिद में आने की मनाही है (मुस्लिम)।

11. जुमे के अलावा आम हालात में भी आदमी को साफ–सुथरा रहना चाहिये। एक बार जब हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने एक व्यक्ति को देखा कि उसके बाल बिखरे हुए हैं तो फरमाया कि क्या उस के पास बाल बराबर करने का सामान न था? एक दूसरे व्यक्ति को मैले कपड़े पहने हुए देखा तो फरमाया कि क्या इसको पानी नहीं मिलता था जिससे वह अपने कपड़े धो लेता? (अबू दाऊद)।

जारी .....

❑❑

कुरआन की पारिभाषिक ..... अल्लाह ने कितने ही फरिश्तों को अपने महान कार्य के प्रबन्ध में लगा रखा है। फरिश्ते जरूरत पड़ने पर जो रूप चाहें धारण कर सकते हैं।

पथभ्रष्ट लोग उन्हें देवी–देवता बनाकर उनको पूजने लगे। उन्हें सिफारिशी और कष्टनिवारक भी समझ लिया गया और उनसे प्रार्थनाएँ भी की जाने लगीं। कुरआन ने फरिश्तों की हैसियत स्पष्ट कर दी है ताकि बहुदेववाद का दरवाजा बन्द हो सके।

बैअत– वचन देना, आज्ञापालन की प्रतिज्ञा करना, वचनबद्ध होना आदि।

बनी इसमाईल– हजरत इसमाईल (अलै.) की संतति के लोग। हजरत इसमाईल (अलै.) हजरत इबराहीम (अलै.) के बड़े पुत्र थे अल्लाह के आखिरी नबी हजरत मुहम्मद (सल्ल.) का जन्म बनी इसमाईल ही की संतति में हुआ।

❑❑

कुर्बानी

— मौलाना मुजीबुल्लाह नदवी

हज्ज की तरह ईदे अज़्हा की कुर्बानी भी हजरत इब्राहीम (अ0) की उस कुर्बानी की यादगार है जो उन्हों ने अपने प्यारे बेटे हजरत इस्माईल (अ0) की कुर्बानी दे कर पेश कर दी है। हदीस में है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि यह कुर्बानी तुम्हारे बाप इब्राहीम (अ0) की यादगार है। कुर्आने मजीद में हज़रत इब्राहीम (अ0) की कुर्बानी का मुफ़स्सल (विस्तार से) जिक्र है। कुर्आने मजीद में है कि अल्लाह ने हज़रत इब्राहीम (अ0) को बुढ़ापे में जो पहली औलाद अता की वह हजरत इस्माईल थे। हज़रत इस्माईल गो साहिबे शऊर (समझ वाले) हो गये थे मगर अभी नाबालिग़ थे कि एक दिन हजरत इब्राहीम (अ0) को ख्वाब (स्वप्न) नज़र आया कि वह अपनी इस अक्लौती औलाद को खुदा की राह में कुर्बान कर रहे हैं। अंबिया का ख्वाव चूंकि सच्चा होता है इस लिये उन्हों ने इसे इशार–ए–गैबी (परोक्ष का संकेत अर्थात ईश संकेत) समझा और बेटे से कहा मैं ने ख्वाब में देखा है, कि मैं तुम को अपने हाथों से कुर्बान कर रहा हूँ, तुम्हारी क्या राय है? हजरत इसमाईल गो बच्चे थे मगर खुदा ने बचपन ही से उन के दिल में नूरे नुबुव्वत की रौशनी दे रखी थी, इस लिये एक फर्माबर्दार (आज्ञाकारी) बेटे की तरह बाप से अर्ज़ किया : अब्बा जान ! आप को जो हुक्मे खुदावन्दी (ईशादेश) मिला है उसे पूरा कीजिये, इनशा अल्लाह आप मुझ को साबिर (धैर्यवान) पांएगे यअनी में खुदा की राह में कुर्बान होने में कोई घबराहट महसूस नहीं करूगा चुनांचि दोनों सज्जनों (बाप, बेटे) ने खुदा की मरजी के आगे सर झुका देना तै कर लिया तो हजरत इब्राहीम (अ0) ने हजरत इस्माईल (अ0) को कुर्बानी करने के इरादे से करवट लिटा दिया। करवट इस लिये लिटया कि बाप की निगाह बेटे के चेहरे पर न पड़े। मुम्किन है कि महब्बते पिदरी जोश करे और छुरी न चलाई जा सके। अल्लाह को हजरत इस्माईल (अ0) का ज़ब्ह किया जाना मक्सूद न था बल्कि हजरत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का इम्तिहान मक्सूद था, चुनांचि जब सुबूत मिल गया तो रब ने हजरत जिब्रील (अ0) के जरीअे उन को इस से रोक दिया और इशार–ए–गैबी के तहत हजरत इब्राहीम (अ0) ने हज़रत इस्माईल (अ0) के बजाए एक दुंबे की कुर्बानी की। कुर्आन ने इस इम्तिहान के बारे में कहा है : "निः सन्देह यह बहुत बड़ी परीक्षा थी"। इस कुर्बानी के जरीअे हम को यह सबक मिला कि खुदा का हुक्म हो तो उस की इताअत व बन्दगी का तकाज़ा (मांग) है कि अपनी महबूब से महबूब चीज भी उस की राह में कुर्बान कर देने में कोई हिचकिचाहट न हो। अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि कुर्बानी के दिनों में सब से जियादा सवाब का काम खून बहाने अर्थात कुर्बानी करने में है और फरमाया कि कुर्बानी के जानवर के एक एक बाल के बदले में एक एक नेकी है।

कुर्बानी किन लोगों पर वाजिब है।

जिन लोगों पर सदक–ए–फित्र वाजिब है उन पर कुर्बानी भी वाजिब है मगर सिर्फ अपनी तरफ से, औलाद की तरफ से कर दे तो सवाब होगा।

कुर्बानी का वक्त तीन दिन यअनी जुलहिज्ज की दस ग्यारह और बारह की शाम तक है। इस मुद्दत में रात या दिन में जब चाहे कुर्बानी कर दे मगर दिन बेहतर है। (अहले हदीस हज़रात 13 की शाम तक कुर्बानी करते हैं–अनुवादक)

किस जानवर की कुर्बानी जाइज़ है?

बकरा, बैल, भैंस, भैंसा, ऊंट, ऊंटनी इन छे जानवरों के नर मादा

दोनों की कुर्बानी जाइज़ है। (भारत में चूंकि गाय की कुर्बानी से फ़ित्ना व फसाद बर्पा हो जाता है हकूमत भी सख्त ऐक्शन लेती है अतः यहाँ गाय की कुर्बानी हरगिज न करें–अनुवादक) अगर कोई जंगली जानवर जैसे हिरन, नीलगाय आदि की कुर्बानी करे तो जाइज़ न होगी चाहे यह जानवर पले हुऐ क्यों न हों।

इस में कुछ जानवर ऐसे हैं जिन की कुर्बानी एक ही आदमी की तरफ से जाइज है जैसे बकरा, बकरी, दुंबा, भेड़ लेकिन बड़े जानवर भैस, पडवा आदि में सात आदमी शरीक हो सकते हैं अगर सातों आदमी एक ही घर के न हों तो गोश्त तौल कर बराबर बराबर तक्सीम करें। अगर सात हिस्से वाले जानवर में सात से कम लोग शरीक हों तो यह भी जाइज है। (अगर कोई बड़ा जानवर पड़वा आदि अकेला कुर्बानी करे तो यह भी जाइज है। लेकिन सात हिस्से होने में सब की बराबरी जरूरी है अगर किसी ने सातवें हिस्से से कम का साझा किया तो किसी की कुर्बानी न होगी अलबत्तागोश्त खाया जा सकेगा (बड़े जानवर के हिस्सों में अक़ीके का हिस्सा लेना जाइज है।–अनुवादक)

जानवर की उम्र

कुर्बानी के लिये ऊंट की उम्र पांच साल, पड़वा भैसा आदि की उम्र दो साल और बकरी, बकरा भेड़ आदि की उम्र एक साल होना जरूरी है। अगर सहीह उम्र न मअ़लूम हो तो जानने वाले देख लें जानवर दांता होना चाहिये। जो उम्रें लिखी गईं उन में वह जानवर आम तौर से दान्त जाते हैं।

कुर्बानी का जानवर कैसा हो।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि कुर्बानी का जानवर अच्छा और तय्यार होना चाहिये। आप ने फरमाया कि अन्धे काने, लंगड़े, दुम कटे की कुर्बानी नहीं करना चाहिये। जिस जानवर के कान या दांत बिल्कुल न हों उस की कुर्बानी दुरुस्त नहीं अल्बत्ता अगर दो चार दान्त न हों, या एक कान तिहाई से कम कटा हो तो कुर्बानी दुरुस्त है। जिस जानवर का सींग जड़ से टूट गया हो उस की कुर्बानी दुरुस्त नहीं अलबत्ता अगर थोड़ा हिस्सा टूट गया हो या सींग निकला ही न हो तो उस की कुर्बानी दुरुस्त है। बहुत जियादा मरयल कमजोर जिस के बदन पर गोश्त न रह गया हो उस की कुर्बानी न करना चाहिये। अगर कुर्बानी के जानवर के पेट में बच्चा निकल आए तब भी कुर्बानी जाइज़ रहेगी उस बच्चे को भी जब्ह कर लें। (उस का गोश्त खाना जाइज रहेगा)

कुर्बानी का तरीका

जानवर को इस तरह लिटाएं कि उस का मुंह किबले की तरफ हो जब्ह करने वाले का मुंह भी किब्ले की तरफ हो। फिर कुर्बानी की दुआ पढ़े, (दुआ हिन्दी जानने वालों की आसानी के लिये हिन्दी में लिखी जा रही है लेकिन इसे किसी जानकार से सीखे बिना सहीह नहीं पढ़ सकते, वैसे दुआ पढ़ना ज़रूरी नहीं है। दुआ यह है :

''इन्नी वज्जह्तु वज्हिय लिल्लज़ी फ़तरस्मावाति वल् अर्ज़ ह्नीफ़ंव्वमा अना मिनल्मुश्रिकीन इन्न सलाती व नुसुकी व मह्याय व ममाती लिल्लाहि रब्बिल् आलमीन लाशरीक लहू व बिज़ालिक उमिर्तु व अना मिनल् मुस्लिमीन अल्लाहुम्म मिन्क व लक।''

फिर ''बिस्मिल्लाहि व अल्लाहु अक्बर'' कह कर छुरी चला कर जब्ह कर दे (बिस्मिल्लाहि व अल्लाहु अक्बर पढ़े बिना जबीहा हलाल न होगा) फिर अपनी जबान में कह ले कि ऐ अल्लाह मेरी जानिब से इस को क़बूल फरमा जैसे अपने महबूब नबी मुहम्मद और अपने खलील इब्राहीम अलैहिमस्सलास की तरफ से कबूल फरमाया। (इस दुआ का पढ़ना भी जरूरी नहीं हैं दिल में नीयत काफी है।) दूसरे की तरफ से कुर्बानी कर रहा हो तो कहे फुला की तरफ से इसे कबूल फर्मा, बड़े जानवर में कई लोग हो तो उन सब के नाम लेकर कहे कि फुलां फुलां की तरफ से कबूल फ़र्मा।

कुर्बानी का गोश्त बेहतर है कि एक तिहाई गरीबों में तकसीम करदे और बकीया को खुद खाए और अपने अजीजों, दोस्तों में तक्सीम करे। अगर किसी को न दे सब खुद खा जाए तो यह भी जांइज है लेकिन अच्छी बात नहीं है। (कुर्आन में है : उस में से

खाओ और फकीर को खिलाओ।) कुर्बानी का गोश्त गैरमुस्लिमों को भी देना जाइज है। लेकिन याद रहे कि मुस्लिम मुहताजों को नजर अन्दाज कर के हिन्दू हजरात को गोश्त पहुंचाना ठीक नहीं है।

मुर्दे के नाम की कुर्बानी

अगर मरने वाला कुर्बानी करने की वसीयत कर गया है तो ऐसी कुर्बानी का सारा गोश्त सदका किया जाएगा लेकिन अगर वसीयत नहीं की कोई अपने मरे हुए अजीज़ की तरफ से कुर्बानी करता है तो इस कुर्बानी का गोश्त खाना और अजीज़ों को खिलाना जाइज है। मगर याद रहे अपनी वाजिब कुर्बानी की अदायगी के बअद ही दूसरे की जानिब से कुर्बानी करें।

कुर्बानी की खाल

कुर्बानी की खाल जब तक बेची न जाए खुद इस्तेअमाल कर सकते हैं। अपने इस्तेअमाल का मतलब यह है कि जाय नमाज बना लें, चलनी बनवालें, झोला बना लें सब जाइज। किसी दूसरे को दें तो उसको इख्तियार है जैसे चाहे काम में लाए लेकिन अगर खाल बेची जाए तो कीमत का सदका करना जरूरी है।

जब्ह की हिदायतें

• जानवर की गरदन में चार रगें होती हैं, उन में से तीन रगों का कट जाना जरूरी है अगर सिर्फ दो रगें कटीं तो जानवर मुर्दार होगा।

• जो लोग कुर्बानी करते हैं उन को छुरी लगा कर अलग न हो जाना चाहिये बल्कि पूरी तरह जब्ह करना चाहिये।

• जब्ह करते वक्त अगर किसी ने जान बूझ कर बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अक्बर छोड़ दिया तो जानवर हराम हो गया, लेकिन अगर इरादा था कि जब्ह के वक्त बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अक्बर पढ़ेगा लेकिन जब्ह के वक्त भूल गया तो जानवर हलाल रहेगा।

• गुट्ठल छूरी से जब्ह करना मकरूह है।

• जब तक जानवर की जान न लिकल जाए उस की खाल न खीची जाए, न उस का गला काटा जाए, न उस को तड़पने के लिये छोड़ दिया जाए बल्कि उसको पकड़े रहना चाहिये।

• मुर्ग़ वगैरह जब्ह करने में उस की गरदन अलग हो जाए तो उससे वह हराम नहीं होगा लेकिन जान बूझ के ऐसा करना मकरूह है।

• जो कसाई या चिक्वे जब्ह करते वक्त जान बूझ कर बिस्मिल्लाह छोड देते है। उन का जबीहा हराम है

• आज कल के ईसाइयों और यहूदियों का जबीहा नाजाइज है।

अक़ीक़ा

बच्चों की पैदाइश पर अक़ीक़ा करना सुन्नत है। लड़के की जानिब से 2 बकरे या बकरियां, लडकी की तरफ से एक बकरी या बकरा जब्ह करना चाहिये अक़ीक़ा सातवें दिन करना चाहिये, उसी दिन बच्चे का नाम रखना चाहिये लड़के की तरफ से दो बकरे न कर सके तो एक ही जब्ह करें, जाइज है। सातवें दिन न कर पाएं तो जब मौकअ मिले तब कर दें, कुर्बानी में अक़ीक़ा के हिस्से लिये जा सकते हैं। बुखारी की रिवायत से साबित है कि अक़ीक़ा से बच्चे की तक्लीफें दूर होती हैं। लेकिन अगर कोई गरीब अक़ीक़ा न कर सके तो गुनहगार न होगा।

अक़ीक़ा के जानवर की वही शर्तें हैं जो कुर्बानी के जानवर की हैं, अक़ीक़े के गोश्त और खाल का वही हुक्म है जो कुर्बानी की खाल और गोश्त का हुक्म है। अक़ीक़े का जानवर उसी तरह जब्ह करेगें जिस तरह कुर्बानी के जानवर को जब्ह करते हैं बस कुर्बानी में कुर्बानी की नीयत हो अक़ीक़े में अक़ीक़े की । ज़िस तरह कुर्बानी में सिर्फ "बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अक्बर" कह कर जब्ह करना जरूरी है दुआएं पढ़ना जरूरी नहीं पढें तो मज़ीद सवाब पाएं अक़ीक़े में भी यही हुक्म है। अक़ीक़े में कुर्बानी वाली दुआ से पहलेयह दुआ पढ़ना मुस्तहब है।

• अल्लाहुम्म हाज़िही अ़क़ीक़तु फ़ुलाँ बिन फुलाँ (लड़का और उसके बाप का नाम लें) दमुहा बि दमिही अ़ज़्मुहा बि अ़ज़्मिही जिल्दुहा बि जिल्दिही, शअ़रूहा बि शअ़रिही फ़तक़्बलहू वज़ुअ़लहा फ़िदाअन लहू अगर लड़की हो तो "बि" के पश्चात वाले शब्दों के आखिर की "ही" को हा से बदल दे तथा बिल्कुल आखिर के लहू को लहा कहें।

❑❑

कुर्बानी से मुतअल्लिक़ एक फ़त्वा

- दारुल उलूम मज़हरे इस्लाम

प्रश्न : क्या फरमाते हैं उलमा–ए–दीन व मुफ़्तियाने शरअ़मतीन इस मसअले में कि, हमारे बाराबंकी के मशरिकी इलाके कठवाही व भटयाना में कुर्बानी के सिल्सिले में यह रवाज पड़ गया है कि बड़े जानवर जैसे पड़वा की कुर्बानी में सात हिस्सों के बजाए छे हिस्सेदार शरीक होते हैं और जानवर की कीमत में सब छे हजरात बराबर बराबर शरीक होते हैं लेकिन कुर्बानी सात आदमियों के नाम से करते हैं इस में सातवां नाम हुजूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का शामिल करते हैं, मैंने कहा सातवा हिस्सा जो हुजूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के नाम होता है उस के मसारिफ़ कोई एक आदमी बर्दाश्त करे छे पर तक्सीम न हो तो मेरी बात का कोई असर न लिया गया लिहाज़ा इस मसअले में शरअ़ी हुक्म से आगाह फरमाइये नीज़ यह भी फरमाइये कि क्या कई लोग मिल कर एक बकरा खरीदें और हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जानिब से कुर्बानी करें तो यह अमल दुरुस्त होगा?

बय्यनू तूजरू

अल मुस्तफ्ती : सय्यिद मुईद अशरफ़ अशरफी, पो.बा. 93 लखनऊ

4 जनवरी 2006 ई0

अलजवाब 786–92 बिऔनिल मलिकिल् वहहाब

आप ने बजा फरमाया, सातवें हिस्से में छे या उस से कम की शिरकत से वह हिस्सा सातवां न रहा, यूंही सात से ज़ाइद शरीक हों जब भी कामिल सातवां न रहेगा और जब वह हिस्सा सावतें से कम हो गया तो इस में कुर्बत न रही और इनअ़िदामे कुर्बत के बाअ़िस किसी की कुर्बानी न हुई। हिदाया में है "व कज़ा इज़ा कान नसीबु अह़दिहिम अक़ल्ल मिनस्सबअ़ि ला यजूज़, अनिल् कुल्लि लि इन्अ़िदामि वस्फ़िल कुर्बः फिल बअ़ज़ि" इस की नजीर यह है कि किसी मय्यित ने बीवी और बेटा छोड़ा और तर्के में एक गाय भी छोड़ी फिर दोनों ने उसी जानवर की कुर्बानी की तो किसी की न हुई कि बीवी का हिस्सा औलाद की मौजूदगी में सुमुन 1/8 होगा। लिहाजा सातवें हिस्से से कम होने की वजह से उसके हिस्से की कुर्बानी न हुई। और जब उस की न हुई तो बेटे की भी न हुई। ऐनी हाशिया हिदाया 3–428 में है "इजा मात व तरक इबनन् व इमरअतन् व बक़रतन् फ़ज़बहहा बिहा यौमल ईद लम यजुज़ लिअन्न नसीबल् मरअति अक़ल्ल मिनस्सबअ़ि फ़ इज़ा लम् यजुज़ फ़ी नसीबिहा लम् यजुज़ फी नसीबिलइब्नि ऐज़न्" यहीं से जाहिर हो गया कि कई लोगों की तरफ से एक बकरे की कुर्बानी भी नहीं हो सकती। अलबत्ता चन्द लोग एक बकरे या वही छे शरकाए बकरा एक हिस्से का किसी एक को मालिक बना दें और बकरा या बकरे का सातवां हिस्सा किसी एक की तरफ से हो तो उस बकरे और सातवें हिस्से की कुर्बानी हो जायेगी, ऐसी सूरत में उस एक की तरफ से कुर्बानी हुई और ऐन कुर्बानी का सवाब तो उसी को मिलेगा औरों को मददे कुर्बानी का सवाब और छवों की कुर्बानी हो जायेगी। हाज़िहिलहीला अश्शरअ़ीया मज़कूरतुन फिरिज़वीया।

अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल के नाम को कुर्बानी करने में, शरीअ़ते मतह्हरा ने सात तक की हद कर दी, जियादा शरीक नहीं हो सकते, अगर होंगे तो वह कुर्बानी न रही, खाने का गोश्त हो गया लिहाजा सात से जियादा न हो सब शरीकों को कुर्बानी का सवाब मिलेगा, और अगर सात आदमी एक गाय की कीमत का चन्दा न कर सकें तो यह मुम्किन है कि सौ आदमियों से चन्दा लें और चन्दा वसूल करने वाला सात आदमियों या उस से कम लोगों को उस चन्दे का मालिक बना दे और यह मालिक लोग बड़ा जानवर खरीद कर अपनी तरफ से कुर्बानी करें तो इन को ऐन कुर्बानी का सवाब मिलेगा और उन चन्दा देने वालों को मददे कुर्बानी का कि वह भी सवाब में कुर्बानी के बराबर होगा। सहीह हदीस में है "मन दल्ल अला खैरिन् कान कमन् मिस्लुहू"

रिजवीया 458/8

वल्लाहु तआला अअ़लम

कतबहू मुहम्मद मुतीउर्रहमान गुफिर लहू रिजवी, ख़ादिम दारुल उलूम मजहरे इस्लाम, मस्जिद बी बी जी, मुहल्ला बिहारीपुर, बरेली शरीफ

❑❑

उन्नीसवीं किस्त

भारत का संक्षिप्त इतिहास

— सैयद अबूज़फर नदवी

मुस्लिम काल

इमाद शाही बादशाह

इस सल्तनत का संस्थापक (बानी) इमादुल मुल्क फ़तहउल्लाह था। यह भी एक नव मुस्लिम था। लड़ाई में कैद होकर आया और महमूद शाह बहमनी के ज़माने में ख्वाजा महममूद गावां मंत्री की कृपा से इमादुल मुल्क की पदवी मिली और बरार का सुबेदार हुआ। 1475 ई0 (880 हि0) में वह स्वतंत्र हो गया। उसके बाद उसका लड़का अलाउद्दीन इमाद शाह बादशाह बना। उसने इस्माईल आदिल शाह की लड़की से शादी करके अपनी शक्ति को बढ़ा लिया।

बुर्हान निज़ाम शाह ने दो किले अलाउद्दीन के दबा लिये। इसलिए दोनों में खूब लड़ाई हुई। जब अलाउद्दीन की पराजय हुई तो खानदेश के हाकिम के साथ मिलकर फिर निज़ाम शाह से लड़ाई की लेकिन दोनों की बुरी तरह हार हुई। आखिर 1526 ई0 (934 हि0) में खानेदश के हाकिम से मिलकर सुल्तान बहारदुर शाह गुजराती को सहायता के लिए बुलाया। मगर उसने आकर बरार को अपनी सल्तनत में मिला लिया और निज़ाम शाह को बाज गुजार (राजस्वकरदाता) बना कर वापस चला गया। अलाउद्दीन इमाद शाह के मरने पर उसका लड़का बुर्हान हम्माद शाह तख़्त का मालिक हुआ। यह बहुत छोटा था। इसलिए दरबार का एक सरदार अमीर तफ़ाउल खां इस लड़के को किले में नज़र बन्द करके खुद मालिक बन बैठा।

मुर्तुजा निजामशाह ने 1572 ई0 (980 हि0) में तफाउल खां से इस बहाने से लड़ाई शुरू की कि कैदी सुलतान को रिहाई दिलाये मगर जब तफाउल खां गिरिफ्तार हो गया तो उसको भी इसी किले में बन्दी बनादिया जहां नन्हा बादशाह क़ैद था 1576 ई0 (984 हि0) में तफ़ाउला खां और उसके खानदान के तमाम लोग मौत के घाट उतार दिये गये और बरार निज़ाम शाही सल्तनत में शामिल कर लिया गया।

बुरीद शाही बादशाह

मुहम्मद कासिम बुरीदशाह एक तुर्की गुलाम था। सुलतान मुहम्मद शाह बहमनी के ज़माने में यहे खरीदा गया था। प्रशिक्षण पाकर यह अच्छे–अच्छे क़ाम पूरा करते करते धीरे धीरे सरदारी के पद पर पहुँचा। मरहटों की बग़ावत को उसने बड़ीखूबी से दबाया। इसके बदले में वह मरहटी जिलों का सूबेदार हुआ। महमूद शाह बहमनी के ज़माने में वह स्वतंत्र हो गया। 1504 ई0 (920 हि0) में मुहम्मद क़ासिम के देहान्त पर उसका लड़का अमीर बुरीद बादशा हुआ। जब कलीम शाह बहमनी अहमद नगर चला गया तो "बेदर" का इलाका इस्माईल आदिल शाह ने अमीर बुरीद के हवाले करदिया। अमीर बुरीद बहादुर शाह गुजराती के मुकाबले में बड़ी मर्दानगी दिखाई। 35 वर्ष हुकूमत की मगर सारी उम्र दकिन के अमीरों से लड़ने में व्यतीत किये। 1538 ई0 (549 हि0) में उसका देहान्त हो गया।

उसके लड़के अली बुर्राद ने जब तख्त पर कदम रखा तो निजाम शाह के परामर्श से उसने "अलीबुरीद शाह" की पदवी ग्रहण की। निजाम शाह ने ताहिर को जो मशहूर शीया आलिम था, मुबारक बाद के लिए भेजा लेकिन उसने उस का अपमान किया। इसलिए निजाम शाह ने हमला किया मगर आदिल शाह की मदद से वह बच गया। 1582 ई0 (990 हि0) में अली बुरीद मर गया तो उसका लड़का इब्राहिम बुरीद शाह सात वर्ष और फिर क़ासिम बुरीद शाह तीन साल हुकूमत कर के मरगये। अब कासिम का कमसिन लड़का तख़्त पर बैठा मगर इसी खानदान के एक व्यक्ति मिर्जा अली बुरीद ने 1601 ई0 (1010 हि0) में हुकूमत उस से छीन ली। उसके मरने के बाद अमीर बुरीद द्वितीय उसका लड़का हाकिम हुआ। 1609ई0 (1018 हि0) के बाद यह सल्तनत समाप्त हो गई।

मालीबार और मोअ़बर (मद्रास क्षेत्र) के बादशाह

100 ई0 से पहले दक्षिणी भारत पर तीन खानदान शासन करते थे। चूल, चीड़, पाण्डिया। इसका जिक्र अशोक के फर्मान और शिलालेखों में भी मिलता है।

यह सल्तनतें ताक़तवर होकर एक दूसरे से लड़ती रहती थीं। 300ई0 तक इन का उत्थान रहा। लेकिन तीसरी शताब्दी में एक जंगली कौम पल्लव निकल आई यह लोग मरहटों की तरह लुटेरे थे। धीर धीरे इन लोगों ने 400ई0 में एक शक्तिशाली राज्य स्थापित करलिया और उस ने तीनों राज्यों को अधीन बना लिया।

सातवीं और आठवीं शताब्दी में चालूक्स और राष्ट्रकोट भी शक्तिशाली हो गये । इन दोनों ने पल्लव कौम की शक्ति काजोर तोड़ डाला और धीरे धीरे उनका पतन होने लगा। 900 ई0 (300हि0) शताब्दी के करीब चूल खानदान ने भी जोर पकड़ा और पल्लव् खानदान को सदा के लिए समाप्त कर दिया।

चालुक्य और राष्ट्रकोट जिन्होंने दक्षिणी भारत के बड़े क्षेत्र पर कब्ज़ा कर रखा था, यह भी आपस में लड़भिड़ कर कमजोर हो गये और चूला खानदान इतना शक्तिशाली हो गया कि उसने तमाम दूसरी ताक़तों को निकाल बाहर किया। बारहवीं शताब्दी में दो और खानदान शक्तिशाली हो गये एक दौलताबाद (देवग्री) का यादव खानदान और दूसरा अधोर समुद्र का खानदान होमीयाला। यह तमाम राज्य 1300 ई0 (600हि0) शताब्दी तक दक्षिणी भारत में काइम रहे।

मुसलमानों का आगमन

माला बार में पहली बार मुसलामनों के पहुंचने की कहानी यह है कि 815 ई0 (200हि0) के बाद हज़रत आदम के पद चिन्हों के तीर्थयात्रियों का एक जहाज लंका जा रहा था कि तूफान के कारण मालाबार के तट पर आ लगा मुसलमान नकन कलूर पहुंचे। उस शहर के राजा का लक़ब (पदवी) सामरी और नाम चीरामन पीरूमल था।

राजा मुसलमानों के एक सूफी गिरोह से मिला और उनकी संगत से मुसलमान हो गया। उसी ज़माने से मालाबार में मुसलमान आबाद हो गए। और फिर धीरे धीरे सारे दक्षिण के तटीय क्षेत्रों में फैल गये। कुछ दिनों के बाद उन इलाकों में मुसलमानों की बहुत बड़ी संख्या हो गयी। हिन्दू राजओं ने भी अपने राज्य में बड़े पद दिये और मुसलमान व्यापरियों को सुविधा दी।

जलालुद्दीन फिरोज शाह खिलजी के जमाने में पूर्वी घाट में जिस को अरब मुअ़बर कहते हैं, मुसलमानों की बड़ी पहुंच पैदा हो गई। चुनांचि यहां के राजा का मंत्री सलाहकार मालिक तकीउद्दीन बिन अब्दुर्रहमान एक मुसलमान था जिन को पटन मूंगी, पटम और बादल का इलाका जागीर में दिया गया। राजा को चिभमन कहते थे मगर उस का असली नाम सुन्दर पाण्डिया था।

मुसलमानों के हमले

1309 ई0 (709 हि0) में अलाउद्दीन खिल्जी का सेनापति मलिक काफूर दक्षिणी भारत विजय करने के लिये रवाना हुआ। वह दौलताबाद से चल कर तीन महीने के बाद कर्नाटक राज्य में पहुंचा। यहां का राजा बलालदेव था। काफूर सख्त लड़ाई के बाद धूर समुद्र तक विजय पताका उड़ाता हुआ चला गया।

सुन्दर पाण्डिया 1292 ई0 (692 हि0) में मर चुका था उसके बाद उसका भाई कलसदेव शासक हुआ। उसके दो लड़के थे, सुन्दर पाण्डिया और बोरा पाण्डिया। छोटा उत्तराधिकारी (वली अहद) था। बड़े लड़के को यह बात नागवार (अप्रिय) गुजरी। उसने 1309 ई0 (709 हि0) में बाप को मारकर खजाने और सेना पर कब्जा कर लिया। बोरा पाण्डिया ने उस को लड़कर पराजित किया। सुन्दर फरार हो कर खिल्जी के सेनापति मलिक काफूर की सेना में आया, जो धूर समुन्दर में मौजूद था, और उस ने सहायता मांगी। काफूर ने वीरा पाण्ड्या को पराजित कर सुन्दर को राज गद्दी दी। इस प्रकार 1310 ई0 (710 हि0) से उसको अधीन राज्यों में माना जाने लगा।

मलिक काफूर मदरा की विजय के बाद रामेश्वर पहुंचा, यहां उस ने मस्जिद बनवाई और अलाउद्दीन का खुतबा पढ़ा कर 1311 (711 हि0) में दिल्ली वापस चला आया।

❑❑

हम कैसे पढ़ायें?

किस्त दस

— डॉ. सलामत उल्लाह

ड्राइंग

अब ड्राइंग, स्कूल के पाठ्यक्रम में अनिवार्य रूप में शामिल समझी जाने लगी है। गायन की तरह यह भी शुरू में एक ऐसा हुनर समझा जाता था जिसे कुछ विशेष छात्र सजावट के तौर पर हासिल करते थे, इस के अलावा इस की शिक्षा भी बहुत नाकिस थी। ड्राइंग का काम सिर्फ नकल तक सीमित था जिस में उस्ताद और विद्यार्थी दोनों मिल कर काम करते थे और इस में अधिकांश सुधार के बहाने टीचर के हाथ से अंजाम दिया जाता था। इस के बाद ड्राइंग फायदे के एतबार से महत्वपूर्ण समझी जाने लगी क्योंकि कुछ विशेष कार्यों जैसे राजगीरी, बढ़इगीरी, इन्जीनियरिंग आदि में बहुत लाभदायक है। इसके अलावा ट्रेनिंग के एतबार से भी इसके शैक्षिक महत्व पर बल दिया जाने लगा, अर्थात यह कि इस से हाथ और उंगलियों के पठ्ठों में लोच पैदा होती है। मानसिक चित्रों को कायम रखने में मदद मिलती है। रचनात्मक शक्ति विकसित होती है। और सफाई व सलीका से काम करने की आदत पड़ती है। बेशक यह बातें किसी हद तक सही हैं। लेकिन किसी विषय को अनिवार्य करने के लिये यह दलील नाकाफी है। यह नतीजे तो अन्य तरीको से भी हासिल किये जा सकते हैं। थोड़ी देर के लिये अगर यह मान भी लिया जाये कि मात्र इन नतीजों की प्राप्ति के लिये ड्राइंग की शिक्षा अनिवार्य है तो भी एक ठोस एतराज बाकी रहता है कि क्या शुरू मे दो तीन साल तक विभिन्न प्रकार की रेखायें खिंचवाने और दी हुई तस्वीरों की नक़ल कराने से किसी प्रकार का तरबियती (दीक्षा सम्बंधी) फायदा हासिल हो सकता है। तरबयिती फायदा हासिल करने के लिये शिक्षण–शैली का महत्व विषय से अधिक है।

अतः ड्राइंग को अनिवार्य विषय बनाने के लिये उक्त कारण अप्रयाप्त हैं। इस का खास मकसद यह है कि इस के द्वारा बच्चों के लिये व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति के लिये अवसर प्रदान किये जायें कि वह अपनी रचनात्मक शक्ति को कार्यान्वित कर सकें जिस से उन की निहित क्षमतायें उजागर हो सकें, इस से बच्चों के सौन्दर्य पहलू की भी ट्रेनिंग होती है क्योंकि वह सौन्दर्य को चित्रों के द्वारा जाहिर करना सीखेंगे। कुछ सुन्दर परिकल्पनायें ऐसी हैं जिन की अभिव्यक्ति जबान और कलम से नामुमकिन है। इस लिये इस विषय की शिक्षा बच्चों को अपने आप में निहित क्षमताओं को उजागर करने में मदद करेगी और इस प्रकार उनके व्यक्तित्व के विकास के लिये सम्भावनायें पैदा होंगी।

ड्राइंग स्कूल के लगभग सभी विषयों में कारामद तरीकें से इस्तेमाल की जा सकती हैं और शिक्षा समाप्त होने के बाद या तो सीधे रोजाना के कामों में इस्तेमाल हो सकती हैं या कम से कम फुरसत के समय के लिये एक प्रिय व्यस्तता बन सकती है। स्पष्ट है कि नतीजा हासिल करने के लिये ड्राइंग की शिक्षा विधि में बड़े परिवर्तन की जरूरत है। शिक्षक को चाहिये कि बजाय नकल करवाने और करेक्शन करने के वह बच्चों को स्वच्छन्द रूप से पेंसल और ब्रुश के जरिये चीजों के बारे में अपने विचार जाहिर करने के अधिक से अधिक अवसर प्रदान करें। सिर्फ इसी सूरत में उन के कामों में उन की शख्सियत उजागर होगी अन्यथा नकली काम तो उन के मन की जिद्दत और उपज का गला घोंट कर रख देगा।

गिलकारी (मिट्टी का काम)

जो बातें ड्राइंग के सिलसिले में ऊपर बयान की गयी हैं वह

गिलकारी के हक में भी सही हैं। एक एतबार से मिट्टी का काम ड्राइंग के मुकाबले में बेहतर मशगलः है क्यों कि इस में चीजों को उन के असली रूप में पेश किया जाता है और ड्राइंग में सिर्फ दो दिशा लम्बाई और चौड़ाई में उन का रेखाचित्र पेश किया जा सकता है।

दस्तकारी (क्राफ्ट)

अब क्राफ्ट भी स्कूल के पाठ्यक्रम का एक आवश्यक अंग बन गया है लेकिन इसके उद्देश्य स्पष्ट नहीं हैं जब तक हाथ के काम को परसनाल्टी को जाहिर करने के जरियः की हैसियत न दी जाये या उसे खूबसूरत और आकर्षक बनाने के लिये आर्ट से मदद न ली जाये या उसे बच्चों की अन्य व्यस्तताओं से न जोड़ा जाये, सामान्य शिक्षा के पाठ्यक्रम में इसे दाखिल कर देने से पूरा फायदा नहीं होगा।

क्राफ्ट का चयन स्कूल के आन्तरिक और बाहरी हालात पर निर्भर है। नगर और देहात क्षेत्र के स्कूल के लिये विभिन्न प्रकार के क्राफ्ट मुनासिब होगें। गांव के स्कूल में बागबानी या कृषि का काम मुनासिब है क्यों कि यह काम न सिर्फ स्कूल के बाहर की जिन्दगी से एक जिन्दा तअल्लुक पैदा करेगा। बल्कि उन व्यस्तताओं से एक ज़िन्दा तअल्लुक़ पैदा करेगा जिनके लिये देहात के माहौल में बड़ी सहूलतें हैं। इसी प्रकार उस नगर क्षेत्र के स्कूल में जहाँ बच्चे ग़रीब घरों से आते हैं कुछ ऐसी दस्तकारियाँ मुनासिब होंगी जो उनके घरों या आस पास में रायज हैं जैसे लकड़ी, गत्ता, धातु का कार्य। इस प्रकार बच्चे अपनी शिक्षा को अधिक सार्थक पायेंगे। और लगन से पढ़ेंगे। इस बात को न भूलें कि लाभकारी काम आधुनिक सभ्यता का पहला क़दम है। इसलिये स्कूल में दस्तकारी भी लाभकारी होनी चाहिये न कि महज़ तमाशे और खेलों की चीज़। इस बात पर हमेशा ज़ोर देना चाहिये कि बच्चे बेहतर से बेहतर चीज़ें बनायें ताकि उनको काम में लाया जा सके, क्यों कि हैंडी क्राफ्ट की पूरी शिक्षा व उपयोगिता सिर्फ इसी दशा में प्राप्त हो सकती है। कैसी भी भली बुरी चीज़ें बनाने से बच्चों में काम को बेगार की तरह ढ़ालने की बुरी आदत पड़ती है। लापरवाही और फूहड़पन पैदा होता है। फिर धीरे धीरे उन्हें घटिया काम से सन्तोष होने लगता है। लेकिन इसका यह मतलब नहीं है कि हम स्कूल को कारखाना बनाना चाहते हैं और बच्चों की मेहनत से नाजायज़ फ़ायदा उठाना चाहते हैं, बल्कि हमारा मक़सद यह है कि बच्चे जो चीज़ें बनायें वह नेशनल कैपिटल व सरमाया की बर्बादी का कारण न हों। अगर उनके बेचने की कोई उचित व्यवस्था हो जाये तो वह उचित दाम में बिक सकें। यह बात ज़रूर है कि शिक्षक की हैसियत से चीज़ों के बेचने की ज़िम्मेदारी हम पर नहीं होनी चाहिये। वास्तव में यह काम राज्य का है इसलिये वह जो भी उपाय उचित समझे, अपनाये।

बुनियादी शिक्षा की योजना में भी क्राफ्ट को जहाँ विशुद्ध मनोवैज्ञानिक तथा शैक्षिक दृष्टि से महत्व दिया गया है, वहाँ इस के सामाजिक पहलू पर भी बहुत ज़ोर दिया गया है। क्राफ्ट श्रमशीलता को बढ़ावा देता है और समाज की उन्नति का अप्रत्यक्ष साधन बन सकता है।

लड़कियों की शिक्षा में घरेलू काम खास कर कढ़ाई, खाना पकाना शामिल करने चाहिए। उनके लिये यह काम उनके भावी जीवन में लाभकारी सिद्ध होंगे और उनकी सामान्य शिक्षा को सार्थक बनायेंगे। ध्यान रहे कि यह काम उतना समय न लेलें कि अन्य विषयों की शिक्षा के लिये समय की कमी पड़े। और यह कि इस की शिक्षा प्रयोगात्मक हो सिर्फ उन किताबों का रट लेना जो कि 'घरेलू साइंस' के शीर्षक से लिखी गयी हैं होम साइंस की शिक्षा के लिये नाकाफ़ी है। (जारी)

प्रस्तुति : एम0 हसन अंसारी

❑❑

कुरआन की परिभाषिक .....

पथभ्रष्ट लोग उन्हें देवी–देवता बनाकर उनको पूजने लगे। उन्हें सिफारिशी और कष्टनिवारक भी समझलिया गया और उनसे प्रार्थनाएँ भी की जाने लगीं। कुरआन ने फरिश्तों की हैसियत स्पष्ट कर दी है ताकि बहुदेववाद का दरवाजा बन्द हो सके।

❑❑

इस्लाहे मुआशरा के कीमती उसूल

(समाज सुधार के बहुमूल्य नियम)

— मौ0 बिलाल हसनी नदवी

मौजूदा दौर के फित्नों में जिस फित्ने ने मुसलमानों की वहदत को पारा पारा (छिन्न भिन्न) कर रखा है वह फितना (आपद) कौमियत (जातिवाद अथव देशवाद) का है। यह कोई नया फितना नहीं है। जमान-ए-जाहिलीयत में इसी कौमियत ने हजारों की जान ली। आदम की औलाद को इसने टुकड़ियों में बांट दिया। कबाइल की तकसीम व तफसील इसलिए थी कि तआरुफ (परिचय) व तफाहुम (पारस्परिक प्रबोधन) का जरिया (साधन) बने लोगों ने इस को ईफ्तिराक (भेद भाव) का जरिया बना लिया। अल्लाह फरमाता है :—

अनुवादः हम ने तुम्हारी जमाअतें और कबीले इस लिये बनाये ताकि एक दूसरे को पहचान सको।

एक रब के बन्दे और एक बाप की औलाद लेकिन रंग व नस्ल ने उन के शीराज़े (प्रबंध) को ऐसा बिखेरा कि वह ताश के पत्तों की तरह बिखर गये।

कौमी फख्र व गुरूर (जाति गर्व) इस तरह उन के अन्दर दाखिल हो गया था कि एक कबीला (गोत्र) दूसरे कबीलों की सरे आम तहकीर व तजलील (अपमान) करता, अपने बाप दादा के मफाखिर (गर्व) बयान करने के लिये मजलिसें (गोष्ठियां) आरास्ता की जातीं और उस में दूसरों की कमजोरियां तलाश की जातीं, उन को नीचा दिखाने की कोशिशें होतीं, इस के नतीजे में कभी कभी बड़ी खूंरेज (रक्तपाती) लड़ाइयों का सिलसिला शुरूअ हो जाता और सैकड़ों जानें तल्फ (नष्ट) हो जातीं लेकिन यह चीजें उन के यहां कुछ भी मअ़यूब (दूषित) न थीं। बल्कि उन की कौमी मशागिल (राष्ट्रीय कार्यों) का एक अहम हिस्सा समझा जाता था। इस्लाम ने इस जाहिली नखवत (अभिमान) और बेजा फ़ख्र व गुरूर को. तोड़ा। कुर्आने पाक में हुक्म होता है।

अनुवाद : ऐ ईमान वालो कोई कौम दूसरी कौम का मजाक न उडाए, हो सकता है कि वह लोग (जिनका मजाक उड़ाया जा रहा है) उन से बेहतर हों (जो मजाक उड़ाने वाले हैं)

आयते शरीफा में हर तरह के कौमी तकुद्दुस की नफी की जा रही है अर्थात जाति अथवा देश के आधार पर बड़प्पन को नकारा जा रहा है। और साफ यह इशारा दिया जा रहा है कि वजहे इम्तियाज किसी कौम का फर्द होना नहीं है, बड़े होने का कारण किसी जाति अथवा देश से सम्बंध होना नहीं है, बल्कि इम्तियाज (श्रेष्ठता) की अस्ल बुनियाद वह सिफात (गुण) हैं जो ईमान वाले के लिये अल्लाह के कुर्ब (निकटता) का जरिआ (साधन) हैं, भलाई इसी में है।

बड़ाई और कमाल (कुशलता) किसी कौम की जागीर नहीं है, यह बड़ाई की सिफ़ात (गुण) हर खोज करने वाले और मेहनत करने वाले को अल्लाह की तौफीक से मिलती है, उन सिफात में बहुत सी बातिनी कैफियात (आंतरिक गुण) और अन्दरूनी हालात वह हालातें हैं जिन को जाहिरी निगाहों से नहीं देखा जा सकता फिर भी हर आदमी अप्नी कमजोरियों से पूरी तरह वाकिफ होता है तो फिर यह कैसे ठीक हो सकता है कि कोई अपने बारे में या अपनी कौम के बारे में बड़ाई का खयाल लाए और दूसरे को कम दर्जा समझे। कुर्आन में सराहत के साथ (स्पष्टतया) इस को रोका गया है, कि कोई कौम दूसरी कौम का मजाक न उड़ाए और उस की नफ्सियाती वजह भी बयान कर दी गयी कि वह अपनी बड़ाई के एहसास में ऐसा कर रहा है तो ऐसा हो सकता है उस की यह बुनियाद ही खोखली हो।

यहां लफ्ज कौम का इस्तिअमाल हुआ है इस के मफ्हूम में खान्दान और कबीला भी दाखिल है, जमाअत और गिरोह भी शामिल है फिर जब कबीला खान्दान और जमाअत को इस से रोका जा रहा है और कहा जा रहा है कि वह

किसी की तहकीर न करें तो किसी एक व्यक्ति को किसी की हतक करने की इजाजत कहां हो सकती है।

खास तौर से "कौम" का जिक्र इस लिये किया जा रहा है कि यह जमान–ए–जाहिलियत का खास मरज था जिस में वह मुब्तला थे। जब उखुव्वते इस्लामी (इस्लामी भाई चारा) की लड़ी में उन को पिरो दिया गया तो अब नस्ल व कौम की तफरीक (भेदभाव) कहां बाकी रह सकती है, इस के मफ्हूम में वाहिद (एक व्यक्ति) भी दाखिल है। आयत की रू से किसी को भी वह फर्द हो या जमाअत हो या कबीला इस का जवाज़ नहीं है कि वह दूसरों का मज़ाक उडाए।

आयत के शाने नुजूल में एक वाकिआ यह भी नक्ल किया जाता है कि बनू तमीम के कुछ लोगों ने एक मौकअ पर उन हजराते सहाबा की तहकीर (हतक) की थी जो कमजोर समझे जाते थे, हजरत बिलाल हबशी, हजरत सुहैब रूमी, हजरत सलमान फारसी जो सब के सब दूसरे मुल्कों के थे। अरब कबीलों में उन की कोई शनाख्त न थी उन को ना मुनासिब कलिमात कह दिये गये थे, इस पर आयत शरीफा में तंबीह की गई और सख्ती से रोक दिया गया।

अगर्चि "कौम" में औरतें भी शामिल हैं और मुमानअत (रोक) आम है लेकिन चूंकि औरतों में यह मरज जियादा होता है, हो सकता है कि किसी फासिद जेहन में यह बात आजाये कि यह हुक्म सिर्फ मर्दों के लिये है इस लिये उन के बारे में मुस्तकिल वही बात दुहराई जा रही है, इर्शाद होता है:

अनुवादः और औरतें भी दूसरी औरतों का मजाक न उड़ाएं, हो सकता है कि जिन का मजाक उड़ाया जा रहा है वह मजाक उडाने वालियों से बेहतर हों।

आयत का यह हिस्सा खवातीन के लिये खास तौर पर काबिले गौर है। समाज में बिगाड़ का एक बड़ा सबब उन की बे एहतियाती है। जिस तरह मर्दों की जिम्मेदारी है कि वह सिन्फे नाजुक का खयाल रखें, आँ हजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक सफर के मौकिअ पर फरमाया था "उन आबगीनों का खयाल रखो (किसी को तकलीफ न पहुंच जाए) आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बढ़ कर औरतों को हक देने वाला और कौन हो सकता है। इसी तरह औरतों को भी इस की तल्कीन की गयी है कि वह खुद हक शिनास और एहसान शिनास बनें। एक हदीस में उन के जहन्नम में जाने के दो बुनयादी अस्बाब बयान किये गये हैं, एक लअ़न तअ़न (दुसरों को बुरा कहना) की कसरत (अधिकता) दूसरे शौहरों की एहसाने ना शनासी आयते शरीफा में भी बतौर खास औरतों को इसी की तल्कीन की जा रही है कि वह एक दूसरे का मजाक न उडाएं और यह बात तो किसी कदर बे शर्मी और बे एहतियाती की है कि वह मर्दों का मजाक बनाए। अगर वह शौहर या बाप है तो यह एहसाने ना शिनासी (कृतघ्नता) की इन्तिहा है और अगर गैर है तो बे एहतियाती के साथ बे हयाई भी है।

इसी आयते शरीफा में दूसरी जिस चीज की मुमानअत की जा रही है वह है "लम्ज़" लम्ज हर उस कलाम या इशारे को कहते है जिस में मुखातब की मजम्मत (निन्दा) की जा रही हो, चिढ़ाया जा रहा हो। कहने वाला जिस चीज का खुद ऐब समझता हो वह उस चीज को मुखातब के अन्दर मौजूद हो तो भी उस का तज्किरा दुरुस्त नहीं है और अगर वह मुखातब के अन्दर मौजूद न हो तब तो उस गुनाह की शिद्दत बढ़ जाती है। बअ़ज़ रिवायात में आता है अगर कोई किसी ऐब को किसी की तरफ मन्सूब करता है तो उस वक्त तक उस को मौत नहीं आएगी जब तक वह भी उस ऐब में मुब्तला न कर दिया जाये। 'लम्ज' की मुमानअत (निषेध) के लिये जो तअ़बीर (शैली) इस्तिअ़माल हुई है वह भी निहायत बलीग (तत्वपूर्ण) है, इर्शाद होता है :–

"वला तलमिजू अन्फुसकुम" एक दूसरे को बुरा मत कहो। अन्फुस नफ्स की जमअ़ है, लुगवी मअ़ना हैं "अपनी जानों को बुरा मत कहो" मफ्हूम इसका यह है कि तुम अपने भाइयों को बुरा मत कहो इस लिये कि इस के नतीजे में तुम को भी बुरा कहा जायेगा। फिर अपने भाइयों

को बुरा कहना अपने ही को बुरा कहना है।

तीसरी चीज जिस से रोका जा रहा है वह बुरे नामों से पुकारना है, फरमाया जा रहा है :

"वला तनाबजू बिलअल्काब" एक दूसरे को बुरे नामों से मत पुकारो, जिन नामों को मअयूब (बुरा) समझा जाता हो, उन से एहतियात करनी चाहिए, बअज़ नाम कभी खिल्की नक्स (पैदाइशी ऐब) की बिना पर पड़ जाते है जैसे अन्धा, काना, बहरा और नाटा वगैरह, जिस को इन नामों से पुकारा जाएगा उस को कितनी तक्लीफ होगी, कभी बुरी आदतों की वजह से नाम पड़ जाते हैं, किसी से चोरी का अमल हो गया हो उस को चुट्टा कहा जाने लगा, वह ताइब हो गया, परहेजगार बन गया तब भी उस को चुट्टा कहा जा रहा है। कोई भी ऐसा नाम जिस से मुखातब तक्लीफ महसूस करे उस से बचना चाहिए, हदीस में आता है कि मुसलमान को तक्लीफ पहुंचाना हराम है चाहे तक्लीफ किसी अमल से पहुंचे या किसी कौल से या बात चीत से सब से बचें।

यह बात याद रखने की है कि हुकूक दो तरह के हैं एक हक अल्लाह का दूसरा हक बन्दों का, अल्लाह तआला तौबा पसन्द फरमाते हैं। सच्ची तौबा करते ही अपने हक वह मुआफ कर देंगे, लेकिन बन्दों का हक उस वक्त तक मुआफ होना मुशकिल है जब तक बन्दों से मुआफ न करा लिया जाये, जो गुनाह हुकूकुल इबाद से मुतअल्लिक है उस गुनाह की तौबा कबूल ही उस वक्त होगी जब हक अदा हो जाये या उस की मुआफी कराई जाये यह तौबा की शराइत में से है।

हमारे मुआशरे का यह बहुत बड़ा मरज़ है जो हम मुसलमानों को घुन की तरह लग गया है इस पर मुशकिल यह कि इस को मरज़ नहीं समझा जाता। अच्छे अच्छे दीनदार लोग इस में मुबतला हो जाते हैं। इस से इन्सानी समाज में मुसलमानों की गलत तस्वीर आ रही है। अख्लाकियात और मुआमलात में खोखला पन बढ़ता चला ज़ा रहा है, इस की इस्लाह की शदीद जरूत है ताकि इस्लामी मुआशरा इन्सानी समाज के सामने इस्लाम की सहीह तस्वीर पेश कर सके।

जब आयते शरीफा में इस्तिहजा करने (हंसी उड़ाने) बुरा कहने और बुरे नामों से पुकारने की मुमानअत (निषेध) है, तो हक मारना किस दर्जे गुनाह की बात होगी। एक बार हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबा से पूछा, जानते हो मुफलिस कौन है? उन्होंने कहा जिस के पास दीनार व दिर्हम (रुपया पैसा) न हो। आप ने फरमाया मुफलिस वह नहीं है, मुफलिस (निर्धन) तो वह है जो कियामत के दिन नेकियां लेकर आएगा लेकिन किसी को सताया होगा किसी का हक मारा होगा, किसी को गाली दी होगी इन तमाम लोगों को उस की नेकियां दे दी जायेंगी और जब नेकियां खत्म हो जाएंगी तो उन लोगों की बुराइयां उस के सर डाल दी जाएंगी और फिर (हजारों नेकियों के बावजूद) उस को मुंह के बल जहन्नम में डाल दिया जायेगा।

जबान का इस्तिअमाल आदमी आसानी से कर लेता है और उस को एहसास भी नहीं होता कि उस से कितने दिल दुखे, कितनों को चोट लगी कहां कहां मुआमलात बनके बिगड़ गये, आयते शरीफा में जिन जिन बातों से रोका जा रहा है उन में से जियादा तर जबान की बे एहतियातीयां और बुराइयां हैं। इस की वजह यही है कि जबान के इस्तिअमाल में आदमी को खौफ नहीं होता वह अक्सर सोच ही नहीं पाता कि उस के नताइज क्या निकलेंगे, हदीस में आता है कि आदमी कभी देखने में जबान से मअमूली सी बात निकालता है लेकिन वह उस को नीचे गिरा कर तहतुस्सरा (पाताल) में पहुंचा देती है। मुआशरे (समाज) के बिगाड में जबान का सबसे बड़ा दख़्ल है। कभी उस का इतना गहरा होता है कि उस का घाव भरना आसान नहीं होता।

छुरी का तीर का तल्वार का तो घाव भरा।

लगा जो जख़्म ज़बां का रहा हमेशा हरा।।

ज़बान के बेजा इस्तिअमाल से आदमी खुद मुसीबत मोल लेता है, उमूमी तौर पर परेशानियों का सबब यही है, कुर्आने मजीद में अल्लाह

तआला फरमाते है :

अनुवाद : ऐ ईमान वालो अल्लाह का तक्वा इख्तियार करो और जंची तुली बात कहो अल्लाह तआला तुम्हारे कामों को बना देगा और गुनाहों को मुआफ कर देगा।

एक हदीस में आता है कि तुम दो चीज़ों की जमानत लेलो मैं जन्नत की जमानत लेता हूं मुंह और शर्मगाह एक दूसरी हदीस में फरमाया "लोगो को मुंह के बल जहन्नम में उन के जबान के करतूत ही ले जाएंगे।" जो लोग बे सोचे समझे जबान का इस्तिअमाल करते हैं वह मअमूली फाइदों के साथ अपना कितना नुक्सान कर लेते हैं इस का अन्दाजा उन को नताइज निकलने के बाद होता है और बहुत से नताइज तो आखिरत पर मौकूफ हैं, इस लिये कुर्आन व हदीस में बार बार इस की ताकीद की गई है। कि जबान का इस्तिअमाल इहतियात से किया जाए, एक हदीस में आता है :

अनुवाद : जो अल्लाह और आखिरत के दिन पर ईमान रखता हो वह भली बात कहे या खामोश रहे।"

हजार खराबियों की जड़ यह जबान है आदमी कभी कुछ नहीं तो अपनी तअरीफ (प्रशंसा) ही शुरूअ कर देता है और उस के अन्दर तअल्ली (अपनी बड़ाई) का एहसास शामिल हो जाता है जो उस को नुक्सान पहुंचाता है। हासिल यह है कि तहफ्फुज (सुरक्षा) के साथ जबान का इस्तेमाल होगा तो बचने की उम्मीद है वरना खतरा ही खतरा है। आयते शरीफा में इसी लिये बड़ी ताकीद के साथ यह अहकामात दिये गये है ताकि जबान से किसी को कोई तकलीफ न पहुंचे, आगे यहां तक इर्शाद फरमाया :

अनुवाद: ईमान के बअद अल्लाह के हुक्म से निकल जाना बदतरीन (बहुत खराब) बात है, इस में साफ साफ यह इशारह है कि ऊपर जिन बातों से रोका गया है वह सब फिस्क (अवज्ञा) में शामिल हैं। एक हदीस में आता है :

"मोमिन को गाली देना फिस्क (अवज्ञा) की बात है।" इस में यह इशारा (संकेत) है कि ईमान का ठप्पा लग जाने के बअद फिर फिस्क (अवज्ञा) की बात आये यह ईमान के तकाजे के खिलाफ है, इस से इस्लाम पर चोट पड़ती है आम (गैर) लोग यह फर्क नहीं कर पाते, जब वह मुंसलमानों में कोई अमल देखते हैं तो उसे इस्लाम की तरफ मन्सूब करते हैं। किसी मुसलमान के अमल से इस्लाम बदनाम हो और उस का यह अमल दावते इस्लाम के लिये रोड़ा बने इस से बढ़ कर बुराई क्या हो सकती है। फिर यह भी सोचने की बात है कि अल्लाह तआला ने ईमान की दौलत से सरफराज फरमाया, ऊंचे अख़लाक़ दिये, ऐसी पाकीजा तअलीमात दीं जो न किसी मजहब में मिल सकती हैं न किसी तहजीब में, उसके बाद फिर आदमी ना फरमानी करे इन तअलीमात की नाकदरी करे तो यह बहुत खराब बात है। तरक्की के बअद तनज्जुली, रौशनी के बाद तारीकी, इल्म के बाद जहालत, ईमान के बाद फिस्क व फुजूर इस को सिवाए बे तौफीकी के और क्या कहा जाये। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जिन चीजों से पनाह मांगी है उन में यह भी है "ऐ अल्लाह नेकी का ताज पहना कर फ़िर उस से महरूम (वंचित) न कर, बड़े से बड़े सरकश, काफिर और गुनहगार के लिये भी अल्लाह ने दरवाजा बन्द नही किया, जब तक जान में जान है दरवाजा खुला हुआ है। अगर इन हजार खराबियों के बअद भी बन्दा मालिक की तरफ लौट आए, तौबा कर ले तो अल्लाह तआला सब मुआफ कर देंगे, बेशक वह तमाम गुनाहों को मुआफ करने वाला है। हां अगर कोई इनाद (द्वेष) ही पर उतारू है और अपने रब की तरफ नहीं लौटता है तो उस के बारे में इरशाद है:

अनुवाद :– "और जो लोग तौबा न करेंगे (बाज न आयेंगे) वह जालिमों से होंगे।" (49:11) कोताही का एहसास बड़ी चीज है। अपनी गलती को गलती समझना मअमूली चीज नहीं है। गलत रास्ते पर पड़ जाने के बअद अगर अपनी गलती का एहसास हो गया तो आदमी ताइब हो सकता है। "सुबह का भूला अगर शाम को घर लौट आये तो उसे भूला नहीं कहते" लेकिन अगर रास्ता भटक जाने के ....

बाकी पेज 11 पर

पहचान एक अच्छे पड़ोसी की

— डॉ0 मुजफ्फर अली

आधुनिक समय में संयुक्त परिवार विघटित होते जा रहे हैं, परिणाम स्वरूप परिवार में पतनी, और बच्चे ही रह जाते है। स्कूल जाने के बाद एवं पति के कार्यालय या दूकान या अन्य और कोई कार्य से बाहर जाने पर महिला ही घर में अकेली रह जाती है। कभी भी कोई आवश्यक कार्य या संकट कालीन स्थिति में यदि आपके पड़ोसी से संबंध अच्छे नहीं हैं तो भारी मुसीबत हो जाती है, अतः पड़ोसी से सम्बन्ध बहुत ही अच्छे होने चाहियें।

कहावत भी है 'सौ अड़ासी एक पड़ोसी'। वक्त पर सब से पहले पड़ोसी ही आप के काम आता है, इस लिए स्वयं भी अच्छे व विश्वासी पड़ोसी बनिये ताकि आपके पड़ोसी भी वैसे ही बन सकें। बड़े अनुभवी व बुजूर्ग लोगों का मत है कि मुसीबत और आड़े वक्त रिश्तेदार वगैरह बाद में पहूँचते है, पड़ोसी ही सब से पहले सहायक होते हैं।

पड़ोस में बच्चे आपस में खेलते रहते हैं। बच्चे चंचल और अबोध होते है और ना समझ भी। छोटी–छोटी बातों तथा खेल–कूद में बच्चे झगड़ते है उन का झगड़ना कुछ समय का या 1–2 दिन का हो सकता है, बाद में वे पुनः एक साथ खेलना शुरु कर देते है। माता पिता को चाहिये कि बच्चों की लड़ाई में स्वयं को न उलझाए अन्यथा बच्चो के कारण ही मन–मुटाव हो जाता है।

बच्चों की खातिर आपस के व्यवहार में फर्क न लायें।

जब भी रेडियो, टी.वी, टेप चलायें तो उसकी आवाज धीमी रखे ताकि इस से आपके पड़ोसी को व्यवधान न हो, हो सकता है कि पड़ोस मे कोई बीमार, कोई विद्यार्थी या कोई परिक्षार्थी हो। आपके पड़ोसी द्वारा इस संबध में कहा भी जाये त्तो उस से अन्यया न लेते हुए सही परिप्रेक्ष्य में देखें। तत्काल ही इस सम्बन्ध में आवश्यक कार्यवाही कर दें अर्थात आवाज धीमी कर दें। इस से आपके पड़ोसी पर अच्छा प्रभाव पड़ेगा और संबंधों में मिठास कायम रहेगी।

प्रायः पड़ोसी में आदत होती है हर छोटी–छोटी वस्तु मांगते हैं। थोड़े –थोड़े समय के अंतराल पर धंटी बजाकर सामान मांगा जाता है जैसे–टार्च, थर्मामीटर, पानी का थर्मस, मोपेड़, बर्फ की ट्रे, या अन्य कोई सामान छोटी–छोटी वस्तु तो कई बार भूल भुलैया में खो जाती है, अतएव बहुत ही आवश्यक परिस्थिति में सामान मांगा जाना चहिए। सामान मांगने के पश्चात कार्य हो जाने के पश्चात तत्काल ही लौटाया जाना चाहिए।

कूड़ा–करकट इस प्रकार डालना चहिए कि उसके कारण पड़ोसी को असुविधा न हो। दूसरे व तीसरे माले पर रहने वाले को तो विशेष सावधानी रखनी चाहिए। कई बार महिलाऐं ऊपर से कचरा फेंक देती है। आम, जामुन, खा कर उन की गुठलियाँ नीचे फेंक देती है जिस से कि राह गीरों को असुविधा होती है, कई बार तो यह झगड़े का कारण बन जाता है, अतः बहुत ही सावधानी रखें।

घरेलू बातो का वर्णन अपने पड़ोसियों से नहीं करना चाहिए। अपनी परिवारिक बातों में किसी का हस्तक्षेप न होने दें न ही पड़ोसियों के मामले में स्वयं हस्तक्षेज करें। कई महिलाऐं प्रायः एक पड़ोसी की बात दूसरे को दूसरे की तीसरे को बताती हैं यह अच्छी आदत नही है, इस से आप पड़ोस में उपहास का पात्र बन जायेंगीं आपस में मन–मुटाव कराने की जगह संबधो को जोड़ना चाहिए इस से आपकी इज्जत में इजाफा होगा।

आपके पास समय है तो इसका यह अर्थ कदापि नहीं कि पड़ोस में जाकर गपशप करें, किसी की आलोचना या निंदा करें। इस से आप से दूसरी महिलाएं कतराने लगेंगीं यदि आपके पास समय है तो पत्र–पत्रिकाएं पढ़ें, समाचार सुनें, बच्चों के होम वर्क में मदद करें पत्र–पत्रिकाओं में लिखने की आदत डालें, अवकाश के समय बच्चों के साथ खेलें उनका सामान्य ज्ञान बढ़ाने के लिए उनकी हर जिज्ञासा का सही समाधान करें।

पड़ोसियों के साथ ज्यादा हंसी मजाक करना व्यर्थ होता है। पुरुष के साथ मर्यादा में रह कर ही सीमित

मात्रा में वार्तालाप करना चाहिए। क्योंकि आपकी हंसी मजाक की प्रवृति से आपके परिवार में या सामने वाला गलत अर्थ लगा लेता है व अशलील हरकत कर बैठता है, अतः मर्यादा में ही रहना चाहिए।

हमेशा पड़ोसी के काम आने का प्रयास करें। यदि पड़ोसी बीमार है तो उसकी कुशल क्षेम पूछना चाहिए, उसके धरेलू कार्य में हाथ बटायें इस प्रकार की साधारण सी बातें संबंधो की प्रगाढ़ता के लिए ज़रूरी हैं। इसके साथ ही सब से महत्वपूर्ण बात यह है इन बातों को कभी भी भविष्य में एहसान जताते हुए उजागर न करें।

किसी बात में पड़ोसी से मतभेद हो जाये तो उसे मनभेद तक न होने दें कभी झगड़े की नौबत भी आ जाये तो बहुत ही विवेक संयम से काम लेना चाहिए तथा संतुलित हो कर अपना पक्ष प्रस्तुत करें, साथ ही सामने वाले पक्ष को भी सुनने का प्रयास करें।

आपके पास पालतू गाय, भैंस, बकरी मुर्गी, कुत्ता है तो खयाल रखें कि उनके कारण आपके पड़ोसी को किसी प्रकार की असुविधा न हो।

पड़ोसी की सुविधा का पूरा–पूरा ध्यान रखना चाहिए।

किसी का विश्वास भंग न करें। पड़ोसन मकान की चाबी दे जायें तो उसके पति या बच्चे आ जायें तो चाबी दे देना चाहिए। ऐसा न हो कि उनकी अनुपस्थिति में आपको किसी सामान की आवश्यकता हो तो आप ताला खोल लें। इस से संबधों की प्रगाढ़ता में खट्टास आ जाती है।

किसी लेखक ने पड़ोसी से प्रेम करने के लिए सत्य कार्यों की सूची दी है, उन में से मुख्य यह हैं: गलत आचरण नहीं करना, बीमारी व कष्ट पीड़ितो को सहायता पहुँचाना, पड़ोसी से बदला लेने की भावना न रखना, उदारता नहीं छोड़ना, बुराई के बदले भलाई, भाई चारे से रहना।

इस प्रकार साधारण सी बातों के द्वारा पड़ोसियों से मधुरता व प्रगाढ़ता कायम रखी जा सकती है।

❑❑

ह़ज्जे इब्राहीमी .....

नीज़ ह़ज्ज करने वालों के अ़मल में जारी व सारी हैं।

हर उस साहिबे ईमान पर ज़िन्दगी में एक बार ह़ज्ज फ़र्ज़ है जो अपने मुतअ़ल्लिक़ीन के नान व नफ़्के और ज़रूरियात के नज़्म के बअ़द ह़ज्ज के सफ़र की इस्तिताअ़त रखता हो। ह़ज्ज का ज़माना मुक़र्रर हुआ, दूर दराज़ से आने वालों के लिये मक्के के चारों जानिब मीक़ातें मुकर्रर हुईं, मीक़ात पर एह़राम की नीयत और एह़राम की चादरें पहने बिना मक्के की जानिब चलना गुनाह बताया गया उस के अह़काम बयान हुए एह़राम के तफ़्सीली अह़काम बताए गये, ह़ज्ज की किस्में इफ़्राद, तमत्तुअ़ और क़िरान में से किसी की भी इजाज़त मिली 8 ज़िल्हिज्ज को मिना जाना फिर 9 को अ़रफ़ात जाना बताया गया और बताया गया कि जिस तरह एह़राम के बिना ह़ज्ज नहीं हो सकता उसी तरह 9 जिल्हिज्ज को अ़रफ़ात में दाख़िल हुए बिना ह़ज्ज नहीं हो सकता। फिर अ़रफ़ारत के मुकम्मल अह़काम, दसवीं रात के अह़काम फिर मिना आकर बड़े शैतान को कंकरीयाँ मारना फिर कुर्बानी कर के सर मुंडाना, एह़राम की चादरें उतार कर नहा धो कर आ़म कपड़े पहन कर तवाफ़े ज़ियारत को जाना इस तवाफ़े ज़ियारत को तवाफ़े इफ़ाज़ा भी कहते हैं यह ह़ज्ज का तीसरा फ़र्ज़ है, इस के बिना भी ह़ज्ज नहीं हो सकता, फिर मिना आना और बकीया दो दिनों में मुक़र्ररा वक़्त पर तीनों शैतानों को कंकरीयां मारना फिर मक्के आजाना, चलते वक़्त तवाफ़े विदाअ़ करना, सई और तवाफ़ के अह़कामात, उम्रे के अह़कामात, मदीना तय्यिबा की ह़ाज़िरी के आदाब वगैरह सब किताबों में मह़फ़ूज़ हैं और अल्हुम्दु लिल्लाह ह़ुज्जाजे किराम के अ़मल में राइज हैं।

ह़ज्ज एक ऐसी इ़बादत है जो बड़े माल वालों ही पर फ़र्ज़ है लेकिन मक्का मुकर्रमा और मदीना तय्यिबा से हर मुसलमान का जज़बाती तअ़ल्लुक़ है इस लिये फ़ाक़ा करने वाला मुसलमान भी इन दोनों मक़ामात की ज़ियारत और ह़ज्ज करने की सआ़दत की दुआ़ करता है। मैं भी दुआ़ करता हूँ कि ऐ अल्लाह मुझ सम्पादक, तथा सच्चा राही के सभी लेखकों और पाठकों को ह़ज्ज व ज़ियारत नसीब फ़रमा।

❑❑

इस्लामी फ़िक़्ह

— मौलाना मुजीबुल्लाह नदवी

इस्लामी शरीअत या इस्लामी फ़िक़्ह का लफ़्ज जब हम बोलते हैं तो उस से वह हिदायते रब्बानी और इर्शादाते नबवी (नबी के कथन) मूराद होते है जो नबीये करीम मुहम्मद सल्लल्लाहुअ़लैहि व सल्लम के वास्ते से हमें मिले और जो आज कुर्आन व हदीस की सूरत में मुकम्मल तौर पर हमारे दर्मियान मौजूद हैं। इस्लामी शरीअ़त के जरीअ़े हमें जो हिदायात व अहकाम (निर्देश तथा आदेश) मिले हैं वह दो तरह के हैं। एक का तअ़ल्लुक़ हमारे ज़मीर दिल और दिमाग़ से है। और दूसरे का तअल्लुक हमारे जिस्म और अअ़ज़ा (अंगों) से है। जिन हिदायात व अहकाम का तअ़ल्लुक हमारे कल्ब व दिमाग (हृदय तथा मस्तिष्क) से है उन को ईमानियात और एअतिकादात (विश्वास तथा आसस्थाएं) कहते हैं और जिन का लअल्लुक जाहिरी अअ़माल (शरीरागों द्वारा किये गये) से है उन की कई किस्में हैं। जैसे इबादात के अहकाम (आदेश) मुआमलात व मुआशरत (व्योहार तथा रहन सहन) के अहकाम, अ़खलाक़ व आदाब (आचार तथा सभ्यता) के अहकाम, हुकूमत व सियासत के अहकाम, अल्लाह के दीन की दअ़वत व तब्लीग़ के अहकाम। इन अहकाम के जो बातिनी (गुप्त) पहलू है उन का जिक्र हर बाब में आएगा।

ईमान व अ़कीदाः—

उलमा ने ईमान की इस्तिलाह तअ़रीफ (पारिभाषिक परिभाषा) यह की हैः

अनुवाद जो हिदायात व अहकाम (निर्देश तथा आदेश) अल्लाह के रसूल, अल्लाह की तरफ से लाए हैं उन पर दिल से यक़ीन करने और ज़बान से इक़्रार करने का नाम ईमान है। (शरहे अकाइद नस्फ़ी पृष्ठ 9)

अकीदा, अक़्द से बना है, जिस के मअ़ना गिरह देने के है, यअ़नी जिस चीज़ का यकीन दिल में पूरी तौर पर बैठ जाता है वही अक़ीदा बन जाता है।

इस तअ़रीफ़ से मअ़लूम हुआ कि अल्लाह तआला के जो अहकाम और उस की जो हिदायात नबीये करीम सल्ललाहु अलैहि व सल्लम पर वह्य के जरीअ़े कुर्आन की सूरत में नाज़िल हुई हैं या वह हिदायात व अहकाम जो रसूलुल्लाह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अहादीस के जरीअ़े हम को मिले हैं चाहे उन का तअल्लुक एअतिकादात (विश्वास) से हो या अमली ज़िन्दगी से, उन पर यक़ीन रखने और दिल के अन्दर उन को बिठा लेने और जबान से उन का इज़्हार करने का नाम ईमान है। इन हिदायात और हकाइक की तस्दीक और इकरार जिन का तअल्लुक उस आलम से है जिस को हमारी आखें नहीं देख सकतीं जिसे आलमे गैब (परोक्ष लोक) कहा जाता है मसलन अल्लाह की जात व सिफात (व्यक्तित्य तथा गुण) की तस्दीक़ (मान लेना) आख़िरत और जन्नत व दोज़ख का यकीन मलाइका पर यकीन तक्दीर और अज़ाबे कब्र पर यकीन , इन सब को ईमानियात और एअ़तिक़ादात कहा जाता है। लेकिन जिन का तअ़ललुक जाहिरी अअ़माल (अंगों द्वारा किये जाने वाले कर्मो से है, उन को फिक़्ह में मुआमलात (सामाजिक व्यवहार) मुआशरत (रहन सहन) और आदाब व अख्लाक (शिष्टता तथा नैतिकता) का नाम दिया जाता है मगर ईमान लाने और यकीन करने के लिहाज़ से दोनों में कोई फर्क नहीं। जिस तरह अल्लाह के नबियों पर ईमान ज़रूरी उसी तरह नमाज फर्ज़ होने का यकीन जरूरी ।

अब अगर कोई शख्स एअतिकादी अहकाम में किसी पर यकीन न रखे या इस्लामी शरीअ़त के अहकाम में से किसी हुक्म का इन्कार कर दे तो दोनों सूरतों में वह मुसलमान नही रह जाएगा, यअ़नी मोमिन होने के लिये जरूरी है कि वह आँ हजरत सल्लल्लाहु

अलैहि व सल्लम की लाई हुई पूर्ण शरीअत को मानता हो। आगे लिखी गई अहादीस से इस की पूरी वजाहत (स्पष्टता) होती है।

अनुवादः कोई शख्स उस वक्त तक मुअमिन नहीं हो सकता जब तक अपनी ख्वाहिश को मेरी लाई हुई शरीअत के ताबिअ न कर दे। (मिशकात पृष्ठ30)

कबील–ए–अब्दुल कैस का वफ्द जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खिदमत में आया तो उन्हो ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अर्ज किया कि आप हमें कुछ ऐसी बुन्यादी बातें बता दें जिन को हम अपनी कौम को जाकर बता दें और उन के ज़रीअे हम सब का जन्नत में दाखिला मुम्किन हो जाए, फिर उस के बअद उन्होंने नशीली चीज़ों के बारे में आप से पूछा, आप ने उन का जवाब दिया, फिर आप ने उनको चन्द बातों का हुक्म फरमाया, सब से पहले आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि अल्लाह वाहिद (यकता) है पर ईमान लाओ। यह फरमाने के बअद आप ने उन से सुवाल किया कि :

''जानते हो कि अल्लाह वाहिद पर ईमान लाने का मतलब क्या है?''

उन्होंने जवाब में अर्ज़ किया कि अल्लाह और उसके रसूल इस को जियादा जानते हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः

अनुवादः इस बात की गवाही देना कि अल्लाह के अलावा कोई मअबूद (उपास्य) नहीं और मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं और नमाज़ काइम करना, जकात देना, रमज़ान के रोज़े रखना और माले गनीमत में पाचंवां हिस्सा अदा करना।(बुखारी)

एक दूसरी हदीस में हैः

अनुवाद : ईमान की सत्तर से जियादा शाखें हैं जिन में अफ्ज़ल कल्म–ए–लाइलाह इल्लल्लाह का इकरार और सब से कम दर्जा रास्ते से किसी तक्लीफ देह (कष्टदायक) चीज़ का हटा देना और हया ईमान का जुज्व (भाग) है (बुखारी व मुस्लिम)

इन हदीसों के अलावा और भी बहुत सी हदीसें हैं जिन में ईमान के मफ्हूम में अकाइद, इबादात और मुआमलात सब को शामिल किया गया है। जिस का मतलब यह हुआ कि पूरी इस्लामी शरीअत का रिश्ता अल्लाह तआला पर ईमान से जुडा हुआ है। अल्बत्ता जहां सिर्फ आलमे गैब (परोक्षलोक) की चीजों पर ईमान लाने का जिक्र होता हैं वहां उस से मुराद पूरी इस्लामी शरिअत नहीं होती बल्कि उस से सिर्फ बुन्यादी अकाइद मुराद होते हैं।

❑❑

तकबीरे तशरीक

अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर ला इलाह इल्लल्लाह वल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर व लिल्लाहिल हम्द।

नअ़त व मन्क़बत

हैदर अ़ली नदवी

कलमए तय्यिब जबां पर जो कोई भी लाएगा
मअ़रिफ़त का नूर उसके दिल में फिर आजाएगा

ज़िन्दगी सरकार की जो भी कोई अपनाएगा
रास्ता ख़ुल्दे बरीं का फिर उसे मिलजाएगा

मुस्तफ़ा की सुन्नतों को जो कोई ज़िन्दा करे
सौ शहीदों का ख़ुदा बदला अ़ता फ़रमाएगा

उम्मती होगा नबी का होगी उसकी शान ये
अपने हमसाए को हरदम वह सुकूँ पहुँचाएगा

है नमाज़ आँखों की ठंडक ये है फ़रमाने नबी
बे नमाज़ी रोज़े महशर देखना पछताएगा

वक़्त के फ़िरअ़ौन तेरा ज़ुल्म हद से बढ़ गया
कोई तो तुझको मिटाने मिस्ले मूसा आएगा

बानियाने ज़ुल्म किस ग़र्रे में हैं वह जान लें
परचमे दीने नबी तो एक दिन लहराएगा

दुश्मने इस्लाम को इस्लाम का पैग़ाम दो
हौसला सिद्दीक़े अकबर से ये आ़लम पाएगा

अल्लाह अल्लाह हज़रते फ़ारूक़ का जाहो जलाल
नामे नामी सुन के बातिल आज भी थर्राएगा

अ़क़्द मे दो नूर आक़ा के उन्हें हासिल हुए
कौन उस्माने ग़नी सा अब मुक़द्दर पाएगा

रब से हासिल है शजाअ़त हैदरे कर्रार को
ज़ेर होकर ही रहेगा जो कोई टकराएगा

मिस्ल अन्जुम के हैं जितने भी हैं असहाबे नबी
इक्तिदा उनकी करे जो हक़ उसे मिल जाएगा

निस्बते हैदर अ़ता करदे ख़ुदा हैदर को तू
रोज़े महशर वह ग़ुलामाने अ़ली कहलाएगा।

❑❑

इस्लामी जीवन व्यवस्था

– शाह क़ादिरी सैयद मुस्तफ़ा रिफ़ाई जीलानी

इन्सान न उतना प्रतिष्ठित व खुदमुख्तार है जितना वह अहं से अपने आप को समझता है और न वह इतना निकृष्ट, पस्त और बेबस व मजबूर है जितना उस ने अपने आप को बना लिया है। इस्लाम ने इन दोनों इन्तिहाई नजरियात (इक्सट्रीम आडियोलोजीज, चरम विचार धाराओं) को झूठा करार देकर, इन्सान के सामने उसकी असल हकीकत को पेश किया है। अल्लाह का इरशाद है, "अल्लाह ने तुम को तुम्हारी माओं के पेट से निकाला इस हाल में कि तुम कुछ भी नहीं जानते थे और तुम्हें कान, आंख और दिल दिये ताकि तुम शुक्रगुजार बनो।" और "हम जिस मुद्दत तक चाहते है तुम्हें मां के गर्भ में ठहराते हैं फिर तुम्हें बाल्यावस्था देते हैं फिर भरपूर जवानी तक पहुंचाते हैं, और तुम में चन्द मर जाते हैं, और चन्द बुढ़ापे की सरहद तक जीते हैं जिस में वह जानते हुए भी नादानी करते हैं।" तथा "हम ने बनी आदम (मानव संतान) को प्रतिष्ठित किया है और उस को जल थल पर सवार कराया है और पाकीजा चीजें खाने को दिया है और उसे अन्य प्राणियों पर फजीलत (उत्कुष्टता) दी है।" (कुरआन)

इस्लाम ने अपने जीवन दर्शन के जरिये हर इन्सान को बुलन्द व बाला मकाम दिया है और बताया है कि "दुनिया तुम्हारे लिये है और तुम आखिरत के लिये हो,

"न तू ज़मी के लिये है न आसमां के लिये
जहां है तेरे लिये तू नहीं जहां के लिये"

–इकबाल

इन्सान को खुदा का हुक्म होता है कि "ऐ इन्सानो! हलाल पाकीजा चीज़ें खाओ" और ताकीद है कि "हलाल चीजों को हराम न ठहराओ"।

इस्लाम ने स्पष्ट रूप से बताया कि यह दुनिया इन्सान के लिये बनाई गयी है उस को चाहिए कि दुनिया को बरते और उस से खूब नफा उठाये, हां बुरे भले और पाक व नापाक के फर्क का ध्यान रखे। इस्लाम ने बताया कि बुराई व नापाकी गुनाह है और भलाई व पाकी नेकी है। मौलाना अब्दुस्सलाम नदवी गुनाह की परिभाषा लिखते हैं कि "गुनाह वह है जो तुम्हारे दिल में खटके और तुम को यह पसन्द न हो कि लोग इस से वाकिफ हों" (तारीख अख़लाके इस्लामी पेज–241) इस्लाम इन्सान को मियाना रवी और मध्यम मार्ग की तालीम देता है। क़ाज़ी मज़हरुद्दीन बेलग्रामी लिखते हैं कि कुरआन ने अपनी तालीमात के बड़े मकसद अर्थात इन्सानों की समाजी जिन्दगी के सुधार का दृष्टिगत रखते हुए बहुत जगह इन्सानों को सम्बोधित किया है और मामूली बातों में भी मध्यम मार्ग अपनाने का हुक्म दिया है सब जानते हैं कि खाना पीना इन्सानी ज़िन्दगी के लिये किस कदर ज़रूरी है, लेकिन इस में मध्यम मार्ग न अपनाया जाये तो इन्सान की तबाही का जरिया बन सकता है। इस्लाम ने खाने पीने की व्यवस्था बता दिया वह यह कि "खाओ और पियो, फिजूलखर्ची मत करो, बेशक वह फिजूलखर्ची करने वालों को पसन्द नहीं करता।" (कुरआन) इस्लाम को यह विशिष्टता प्राप्त है कि उस की आसमानी किताब का एक बड़ा हिस्सा आचरण की उन बातों के लिये है जिन पर अमल करके इन्सान सही अर्थ में इन्सान बन सकता है।

इस्लामी दृष्टिकोण से जीवन का दूसरा पहलू यह है कि दुनिया की जिन्दगी से प्रभावित होकर इन्सान यह न समझ बैठे कि उस को यहीं हमेशा रहना है। उसे याद रखना चाहिए कि यह माल व दौलत और शान व शौकत के सामान सब नापायदार हैं, ...

बाकी पेज 8 पर

क़ुरआन की पारिभाषिक शब्दावली

डॉ0 मुहम्मद अहमद

ज़कात– बढ़ना विकसित होना, शुद्ध होना। पारिभाषिक रूप में जकात एक निश्चित धन को कहते हैं। इसे अपनी कमाई और अपने माल में से निकालकर अल्लाह के बताए हुए शुभ कामों में खर्च करना अनिवार्य ठहराया गया है जैसे–मुसाफ़िरों, मुहताजों की सेवा, ऋण के बोझ से छुटकारा दिलाना, सत्य–धर्म के लिए किए जानेवाले प्रयासों में खर्च करना आदि। ज़कात की हैसियत किसी टैक्स या कर की नहीं है, बल्कि यह एक प्रकार की इबादत है। ज़कात देकर बन्दा अल्लाह का शुक्र अदा करता है और इस प्रकार वह अपनी आत्मा को भी विशुद्ध और विकसित करता है। स्वयं ज़कात शब्द से भी इस तथ्य की ओर संकेत होता है।

जन्नत– बाग़, स्वर्ग, आखिरत में अल्लाह के नेक बन्दों के रहने की जगह।

ज़बूर– पट्टिका, पर्ण, पत्र, किताब। जो पैग़म्बर हज़रत दाऊद (अलै0) पर अवतरित हुई थी।

जहन्नम– नरक, दोज़ख। आखिरत में जहाँ अल्लाह के विद्रोही और अवज्ञाकारी लोगों को रखा जाएगा वहाँ वे यातनाग्रस्त होंगें वे आग में जलेंगे।

ज़िक्र– स्मरण, याद, स्मृति, याददिहानी, नसीहत, उपदेश, इतिहास, हर वह चीज़ जो किसी का स्मरण कराए। कुरआन और दूसरी आसमानी किताबों को भी ज़िक्र कहा गया है।

जिज़या– रक्षा–कर। इस्लामी राज्य में बसनेवाले ग़ैर मुस्लिम लोगों से उनकी जान, माल और आबरू की रक्षा के बदले में लिया जाने वाला कर (Tax)। यह कर उस राजप्रबन्ध के कामों में खर्च होता है जो गैर मुस्लिमों की रक्षा की ज़िम्मेदारी लेता है। मुहताज और विवश ग़ैर मुस्लिम से जिज़या नहीं लिया जाएगा बल्कि हुकूमत स्वयं उसकी ज़रूरतें पूरी करेगी।

जिन्न– जिन्न शब्द में गुप्त और छिपे हुए होने का अर्थ पाया जाता है। जिन्न मनुष्यों से भिन्न एक प्रकार की मख़लूक हैं। जिन्न चूँकि आँखों से दिखाई नहीं देते। इसी लिए उन्हें जिन्न कहा जाता है।

जिबरील– यह इबरानी भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ होता है अल्लाह का बन्दा। जिबरील अल्लाह के एक प्रमुख फ़रिश्ते का नाम है। हज़रत जिबरील(अलै0) का विशेष काम यह रहा है कि वे अल्लाह का कलाम और आदेश नबियों तक पहुँचाते रहे हैं।

जिहाद– जानतोड़ कोशिश, ध्येय की सिद्धि के लिए संपूर्ण शक्ति लगा देना। युद्ध के लिए कुरआन में 'क़िताल' शब्द प्रयुकत हुआ है। जिहाद का अर्थ क़िताल के अर्थ से कहीं अधिक विस्तृत है। जो व्यक्ति सत्य–धर्म के लिए अपने धन, अपनी लेखनी, अपनी वाणी आदि से प्रयत्नशील हो और इसके लिए अपने को थकाता हो वह जिहाद ही कर रहा है। धर्म के लिए युद्ध भी करना पड़ सकता है और उसके लिए प्राणों का बलिदान भी किया जा सकता है।

यह भी जिहाद का एक अंग है। जिहाद को उसी समय इस्लामी जिहाद कहा जाएगा जबकि वह अल्लाह के लिए हो अल्लाह के नाम और उसके धर्म की प्रतिष्ठा के लिए हो, न कि धन–दौलत की प्राप्ति के लिए हो जिहाद का मुख्य उद्देश्य है सत्य–मार्ग की रुकावटों को दूर करना, संसार को अल्लाह के अतिरिक्त दूसरों की दासता से छुटकारा दिलाना धर्म के पालन में जो बाधाएँ और रूकावटें खड़ी होती हैं उन्हें दूर करना।

ज़ुह्र– तीसरा पहर, दिन ढलने का समय, वह नमाज़ जो दिन ढलने के बाद पढ़ी जाती है।

तक़वा– डर रखना, संयम, धर्मपरायणता, परहेज़गारी। तक़वा का धात्वार्थ है बचना। किसी चीज़ से पहुँचने वाली हानि से अपने आपको बचाना, किसी आपदा से डरना, अल्लाह की अवज्ञा से बचना और उसकी नाराज़गी से बचना।

तक़वा वास्तव में वह एहसास और मनोभाव है जो अल्लाह के डर से मन मैं पैदा होता है, और फिर मनुष्य अल्लाह के आदेशों के पालन में लग जाता है और उसकी अवज्ञा से बचने की कोशिश करता है। अच्छे वस्त्र की तरह तक़वा भी मनुष्य के आत्मिक सौन्दर्य को बढ़ाता है। इससे अनिवार्यतः उसके जीवन में सुन्दरता और पवित्रता आ जाती है।

तयम्मुम–पानी न मिलने पर स्नान और वुज़ू के बदले तयम्मुम से काम लेते हैं अर्थात पाक मिट्टी पर हाथ मारकर अपने मुँह और हाथों पर हाथ फेर लेते हैं। यह तरीक़ा इसलिए अपनाया गया है ताकि शुद्धता और पाकी का विचार सदैव बना रहे और आदमी कभी भी उससे बेपरवाह न हो।

तलाक़– छुटकारा, पति द्वारा पत्नी का परित्याग। विवाह–विच्छेदन।

तवाफ़– परिक्रमा, चककर लगाना। हज या उमरा करने वाले अल्लाह के घर काबा के चारों ओर सात चक्कर लगाते हैं। इसे तवाफ़ कहते हैं।

तसबीह (Glorification)– अल्लाह की महानता का वर्णन। तसबीह का धात्वार्थ है चेहरे के बल बिछ जाना। नमाज़ को भी तसबीह कहा गया है, इसलिए कि नमाज़ में नमाज़ी अल्लाह के आगे सजदे में चेहरे के बल बिछ जाता है और उसकी महानता का वर्णन करता है। संसार की समस्त चीज़ें अल्लाह की महानता की साक्षी हैं और अल्लाह की बड़ाई और उसके हुकम के आगे झुकी हुई हैं। इसी लिए कुरआन में आया है कि संसार की सारी चीज़ें अल्लाह की तसबीह कर रही हैं।

तहज्जुद– नींद तोड़कर उठना। इसके अभिप्रेत वह नमाज़ है जो रात के एक हिस्से में सो लेने के पश्चात उठकर पढ़ी जाती है। सोने से पहले भी यह नमाज़ पढ़ सकते हैं।

तागूत– यह शब्द 'तुगयान' से निकला है। तुगयान का अर्थ है सीमा से आगे बढ़ना, निरंकुश हो जाना। अतः हर उस चीज़ को तागूत कहेंगे जिसमें अल्लाह के मुकाबले में उद्‌ण्डता पाई जाती हो और जो उद्‌ण्डता पर लोगों को उभारती हो, चाहे वह आदमी की अपनी इच्छा हो या समाज का कोई भी व्यक्ति हो, या कोई हुकूमत या संस्था हो, या स्वयं शैतान या इबलीस हो।

तूर– पहाड़। एक विशेष पहाड़ का नाम। सीना पर्वत, मूसा पर्वत जो कुरआन के अवतरण काल में 'तूर' के नाम से विख्यात था। यह पर्वत प्रायद्वीप सीना के दक्षिण में स्थित है। इसकी ऊँचाई 7359 फीट है।

तौबा– पश्चाताप, क्षेमा, याचना, लौटना, पलटना, उन्मुख होना, आदि। मनुष्य की ओर से तौबा का अर्थ यह होता है कि वह गुनाह और बुराई को छोड़कर अल्लाह की प्रसन्नता की ओर पलटता है। और अल्लाह की ओर से तौबा का अर्थ यह होता है कि वह अपने बन्दे पर दया–दृष्टि डाले और उसके गुनाह को क्षमा कर दे और अपनी नाराजगी समाप्त करके उसकी ओर रहमत के साथ पलट आए।

तौरात– यह इबरानी शब्द है जिसका अर्थ होता है 'आदेश और कानून' तौरात वह किताब है जो हजरत मूसा (अलै.) पर अवतरित हुई थी।

तौहीद– एकेश्वरवाद। अल्लाह को एक मानना और किसी को उसका साझी और समकक्ष न ठहराना। यही तौहीद तमाम नबियों की शिक्षाओं की आधारशिला रही है। तौहीद केवल एक धारणा ही नहीं, बल्कि हमारे संपूर्ण जीवन पर इसका प्रभाव पडता है।

दीन– धर्म, जीवन–प्राण। वह विधान जिस पर मनुष्य की विचारधारा और कार्यप्रणाली आदि सब कुछ अवलंबित हो।

नज़्र (नज़्र) – भेंट प्रण, मन्नत। केवल अल्लाह ही के आगे नज़्र पेश की जा सकती है। किसी और के आगे नज़्र गुजाराना जायज़ नहीं। हम प्रेम भाव से यदि किसी को काई चीज़ देते हैं उसे हद्‌या या उपहार कहेंगे, नज़्र नहीं। नज़्र केवल अल्लाह के लिए खास है।

नबी–पैगम्बर, ईशदूत, जो नुबूवत के पद पर नियुक्त किया गया हो, सनदेष्टा। नबी पर खुदा का कलाम उतरता है। खुदा उसे

अपने आदेश से अवगत कराता है। फिर नबी का कर्तव्य यह होता है कि वह लोगों तक अल्लाह का पैगाम पहुँचाए। संसार में बहुत–से नबी हुए हैं। सबसे अंतिम नबी हज़रत मुहम्मद (सल्ल.) हैं।

नमाज़– नमाज़ के लिए कुरआन में 'सलात' शब्द प्रयुक्त हुआ है। सलात का अर्थ होता है किसी चीज़ की ओर बढ़ना और उसमें प्रविष्ट कर जाना, किसी चीज़ की ओर ध्यान देना। यहीं से यह शब्द झुकने और प्रार्थना के अर्थ में प्रयुक्त होने लगा। पूजा और इबादत के लिए इस शब्द का प्रयोग अत्यंत प्राचीन है। सलात बन्दे को उसके अपने रब से मिलाती और उससे जोड़ती है। नमाज़ के लिए सलात शब्द अत्यन्त अर्थपूर्ण है।

नमाज़ क़ायम करना– नमाज़ को ठीक ढंग से उसके सारे नियमों के साथ अदा करना।

निफ़ाक़– छल, कपट, भीतरी बैर, कपटाचार। निफ़ाक़ या कपटाचार यह है कि कोई एक दरवाज़े से तो धर्म में प्रवेश करे किन्तु दूसरे दरवाज़े से बाहर निकल जाए।

बाह्य रूप से तो अपने को मुसलमानों मे शामिल रखे लेकिन इस्लाम से उसका वास्तविक सम्बन्ध न हो। निफाक कई प्रकार का होता है विवरण के लिए देखिए 'मुनाफ़िक़'।

नुबूवत–पैग़म्बरी, ईशदूतत्व, नबी होने का भाव। विवरण के लिए देखिए 'नबी'।

नूह की जातिवाले– वे लोग जिनके बीच नूह (अलै.) ने खुदा की ओर से धर्म–प्रचार किया। कुरआन और बाइबिल से यह संकेत मिलता है कि नूह की जातिवालों का निवास–स्थान वह भूभाग था जो आज इराक़ कहलाता है। इसकी पुष्टि ऐसे शिलालेखों से भी होती है जिसका उल्लेख कुरआन और बाइबिल में पाया जाता है। इन शिला लेखों में उस जलप्लावन का उल्लेख मिलता है जिस का उल्लेख कुर्आन और बाइबिल में पाया जाता है। इस जलप्लावन से मिलती–जुलती कथाएँ यूनान, मिस्र भारत और चीन के साहित्य में भी मिलती है, बल्कि वर्मा, मलाया, आस्ट्रेलिया, न्यूगिनी, अमेरिका और यूरोप के विभिन्न भागो में भी ऐसी ही जनश्रुतियाँ प्राचीन काल से चली आ रही हैं। इससे यह अंदाजा होता है कि जलप्लावन की घटना उस समय की है जब संपूर्ण मानव जाति किसी एक भू–भाग में बसती थी, फिर वहीं से निकलकर वह दुनिया के विभिन्न भागों में फैली।

जलप्लावन के अवसर पर अल्लाह के आदेश से हजरत नूह (अलै.) और उनके साथी जिस नाव में सवार हो गए थे, उस नाव का ढाँचा अभी जलद ही जूदी पर्वत पर खोज लिया गया है। यह खोज एक अमरीकी वैज्ञानिक Vendyl jones के प्रयास का फल हैं। (विस्तार के लिए देखिए 'The Mail on Sunday, London, January 30,1994)

फ़ज्र– उषाकाल, पौ फटना। वह नमाज़ जो सवेरे पौ फटने के बाद और सूर्योदय से पहले पढ़ी जाती है।

फ़िदया– मुक्ति, प्रतिदान, अर्थदण्ड। वह धन जिसके बदले में किसी अपराधी को छुड़ाया जाए या प्राणदंड से मुक्त कराया जाए। वह माल जो व्यक्ति अपनी किसी खता और कोताही के बदले में मुहताजों पर खर्च करे।

फ़िरदौस (Paradise)– जन्नत, बैकुण्ठ, स्वर्ग। फिरदौस शब्द संस्कृत, ईरानी, यूनानी, अरबी आदि लगभग सभी भाषाओं में पाया जाता है यह शब्द सभी भाषाओं में ऐसे बाग़ के लिए प्रयुक्त होता है जो विस्तृत हो और उसके चारों ओर प्राचीर हो और आदमी के निवास–स्थान से मिला हुआ हो और उसमें हर प्रकार के फल विशेषतः अंगूर पाए जाते हों।

फ़िरिश्ता(Angel)– कुरआन में इसके लिए 'मलक' शब्द आया है मलक का अर्थ होता है संदेश लानेवाला। फरिश्तों में इसकी क्षमता होती है कि वे ब्रह्मलोक से अपना संपर्क स्थापित कर सकें और मानव–जगत से भी अपना सम्बन्ध जोड़ सकें। इसी लिए वे अल्लाह का संदेश नबियों तक पहुंचाने के लिए नियुक्त हो सके हैं। फरिश्ते अल्लाह के पैदा किए हुए और उसके बन्दे हैं। वे वही काम करतें हैं जिनका उन्हें आदेश होता है वे हमेशा अल्लाह का गुणगान करते रहते हैं .....

बाकी पेज 21 पर

ब्रोनाई दारुस्सलाम

—अब्रार हुसैन अय्यूबी नदवी

ब्रोनाई दारुस्सलाम दक्खिन पूरब एशिया का एक अति धनवान, उन्नति प्राप्त इस्लामी देश है। इस का पुरातन नाम ब्रोनियो है। ब्रोनाई के दक्खिन मलेशिया, सिंगापुर, इन्डोनेशिया, उत्तर फिल्पाइन और वेतनाम, पूरब में मलेशिया के दो प्रान्त सारा वाल और सबात हैं। राजधानी बन्दर सिरी बेगवान, सुल्तान (शासक) का नाम "हसनुलबल्कीयः मअजुद्दीन" है। देश का क्षेत्रफल 5765 वर्ग कि0मी0 है। जनसंख्या 374577 इस में मुस्लिम जनसंख्या का अनुपात 67 प्रतिशत, बुद्धिष्ट का 13 प्रतिशत, ईसाइयों का 10 प्रतिशत तथा दूसरों का 10 प्रतिशत है। पढ़े लिखों का प्रतिशत 92.7 है, यहाँ मलाई, अंग्रेजी तथा चीनी भाषाएं बोली जाती हैं, यहां की करन्सी ब्रोनाई डालर है, प्रति व्यक्ति वार्षिक आय पचीस हजार डालर से अधिक है। यहां रबर, नारियल, अनन्नास, चावल, फल तथा सब्जियों की खेती होती है। खनिज पदार्थों में पेट्रोल और गैस हैं।

ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि (तारीखी पसे मंज़र)

यह भूक्षेत्र शताब्दियों पहले, मुस्लिम व्यापारियों द्वारा इस्लामी शिक्षाओं से परिचित हुआ। इस भूक्षेत्र पर इस्लाम के प्रकाशन व प्रचलन में दो व्यक्तियों की कीर्ति (कारनामा) भुलाई नहीं जा सकती, एक तो यहाँ का शासक "अवांग अलक बेटर (AWANG ALAK BETAR)" जिसने इस्लाम स्वीकार करने के पश्चात अपना नाम "मुहम्मद" रखा। इस शासक के इस्लाम स्वीकार करने का कारण यह बताया जाता है कि यह 828 हिज्री में सुल्तान मुहम्मद शाह से मिलने मलाका गया। इस्लामी शिक्षाओं तथा एकेश्वरवाद की वास्तविकता से ऐसा प्रभावित हुआ कि वहीं इस्लाम स्वीकार कर लिया। दूसरा व्यक्ति एक अरब मुबल्लिग व दाअी (इस्लाम प्रचारक व आवाहक) सुल्तान बरकत है, जिन की सुचेष्टाओं ने यहां के निवासियों के दिल जीत लिये तदोपरांत ही यह देश एक इस्लामी देश जाना जाने लगा।

साम्राज्य वादियों का अधिकार और स्वतंत्रता

उन्नीसवीं शताब्दी के आरंभ में यह देश योरोपी पर्यटकों, व्यापारियों तथा साम्राज्यवादियों की ललचाई दृष्टि का केन्द्र बन गया। सर्वप्रथम वलन्देज़ियों ने इस पर अधिकार जमाया। 1888 ई0 में बर्तानिया के प्रभावधीन हो गया, 1906 ई0 में सत्ता नियमित रूप से बर्तानवी रेज़ीडेन्ट के हाथ में आ गई, सुल्तान केवल वैधानिक शासक था। 1929 ई0 में तेल के बड़े भण्डारों का पता लगा। 1953 ई0 ब्रोनाई सरावाक बर्तानवी कमिश्नर के आधीन रहे केन्द्र स्थान सिंगापुर था 1959 ई0 ब्रोनाई के सुल्तान को अन्दरूनी इख्तियारात मिले। परन्तु रक्षा विभाग तथा वैदेशिक नीति का अधिकार बर्तानिया के अधिकार ही में रहा। 1963 ई0 में इस्लाम का प्रचलन आरंभ हुआ तथा कठोरता से उसे लागू किया जाने लगा। पहली जनवरी 1984 ई0 को इसे एक स्वतंत्र इस्लामी देश के रूप में माना गया और स्वतंत्रता दिवस का पर्व मनाया गया।

वर्तमान परिस्थिति

तेल उत्पादन के कारण पूरे देश में बड़ी समृद्धि है। जनता को सभी सामाजिक सुविधाएं उपलब्ध हैं, चिकित्सा तथा शिक्षा सम्बन्धी सुविधाएं निःशुल्क उपलब्ध हैं, निर्धनों के लिए वृत्ति तथा अपलागों के लिये अनुवृत्ति की व्यवस्था है, किसी प्रकार का कोई कर नहीं लिया जाता है। शैक्षिक तथा आर्थिक क्षेत्र में बड़ी उन्नति हुई है। 2003 ई0 में शिक्षितों का दर 80 प्रतिशत था जो अब 92.7 प्रतिशत है। इस समय प्रति व्यक्ति वार्षिक आय पचीस हजार डालर से अधिक है।

❑❑

किस्त 9

हिन्दी लिपि में उर्दू शब्दों का उच्चारण तथा अर्थ

— इदारा

नोट : बिन्दी वाले अक्षरों के उच्चारण स्थान, उर्दू वालों से सीखना आवश्यक है।

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
तक़र्रुब	निकटता	तकरीम	सम्मान करना	तलफ़्फ़ुज़	उच्चारण
तक़रीब	पर्व, उत्सव	तकल्लुफ़	संकोच	तल्क़ीन	उपदेश
तक़रीबे शादी	विवाहोत्सव	तकल्लुफ	कृत्रिमता	तलम्मुज़	शिष्यता
तक़रीबन	लगभग	तकल्लुम	बात करना	तिल्मीज़	शिष्य
तक़रीर	भाषण	तक्लीफ़	पीड़ा	तलव्वुन	अस्थिर्ता
तक़रीज़	सराहना	तक्लीफ़ देह	कष्ट दायक	तमत्तुअ़	लाभ प्राप्त
तक़सीम	विभाजन	तकमिला	पूरक	तम्सील	उपमा
तक़श्शुफ़	वैराग्य	तक्मील	पूर्ति	तमददुन	नागरिकता
तक़सीर	दोष	तक्वीन	प्रकृति	तमुद्दुनी	सांस्कृतिक
तक़तीअ़	आकार	तक्वीनी	प्राकृतिक	तमर्रुद	उद्दण्डता
तक़लीद	अनुसरण	तग व दौ	प्रयास	तमसख़ुर	उपहास
तक़वा	संयम	तलाश	खोज	तमस्सुक	ग्रहण
तक़्वीयत	शक्ति प्राप्ति	तलाशी	विचयन	तमग़ा	पदक
तक़्वीम	जंतरी	तलातुम	तरंग	तमक्कुन	अधिपत्य
तकान	शिथिलता	तलाफ़ी	क्षति पूर्ति	तमल्लुक़	चाटुकारिता
तकब्बुर	अभिमान	तिलावत	पाठ	तमन्ना	अभिलाशा
तकद्दुर	मलीनता	तल्ख़	कटु	तमव्वुज	तरंग
तक्जीब	झुठलाना	तल्ख़ी	कटुता	तमव्वुल	समृद्धि
तकरार	पुनरावृत्ति	तलत्तुफ़	कृपा	तमहीद	भूमिका
तकरार	विवाद	तल्फ़	नष्ट	तनाज़अ़	विवाद

पाठक जिस उर्दू शब्द का अर्थ जानना चाहेंगे अर्थ सहित छापा जायेगा।

मानवता का सन्देश

— इदारा

ईश्वर को धन्यवाद है कि हम मानव हैं, इस धरती पर अनगिनत सृष्टियाँ हैं। उनमें मानव अथवा मनुष्य सर्वश्रेष्ठ है। इसलिये कि इसको उन्नति प्रदान करने वाली, उन्नतिशील बुद्धि मिली है। बुद्धि तो सभी जीवधारियों को मिली हैं परन्तु केवल उनकी आवश्यकताओं के पूरा करने में सहायक हैं। चारा मिला खा लेंगे, पानी मिला पी लेंगे नहीं मिला और बंधे नहीं हैं खुले हैं तो चल फिरकर ढूंढेगे जहाँ मिलेगा खा पी लेंगे। उनकी बुद्धि इस प्रकार की नहीं है कि लहलहाते गेहूँ के खेत और उसी के निकट हरी भरी घास में अंतर कर सकें, जो सामने आया उसमें मुंहमार देंगे, गड्ढे में गन्दा पानी भरा है नान्द में साफ पानी भरा है इसमें वह अंतर नहीं कर सकते, जो आगे आया उसमें से पी लेंगे। मारोगे तो इतनी बुद्धि है कि मार से भागेंगे लेकिन यह समझ कदापि नहीं है कि क्यों मारे गये, ऐसा काम न करें कि न मारे जाएं। चोट पर, दुख पर उनको रोना नहीं सिखाया गया, खुशी पर उनकों हंसना नहीं सिखाया गया, वह बीमार हों, कोई रोग लग जाए, दवा खिलाएं अच्छे हो जाएं, फिर बीमार पड़ें, आप उनको खोल दें उनके कान में कह दें अस्पताल चले जाओ वह न जाएंगे इसलिये कि इतनी समझ वाली बुद्धि नहीं रखते। सत्य यह है कि वह चलते फिरते वनस्पत है। परन्तु मानवजाति को ऐसी बुद्धि मिली है कि उसकी बुद्धि की समीक्षा सरल नहीं। इसकी बड़ी विशेषता तो यह है कि इसकी बुद्धि उन्नति देने वाली है। निःसन्देह च्यूँटी जिस प्रकार अपना घर बनाती है मनुष्य के बस की बात नहीं परन्तु वह सहस्त्रों वर्ष पहले जैसे अपना घर बनाती थी, आज भी उसी प्रकार बनाती है तनिक भी अन्तर न कर सकी, यह सत्य है कि उनको जो स्थिर बुद्धि दी गई है वह आश्चर्य जनक है। बया का घोंसला, मधुमक्खी का छत्ता, उसमें मधु का एकत्र करना, मच्छरों और खटमलों के खून चूसने की विधि, दीमकों का लकड़ी खाकर मिट्टी में बदल देना, केचुओं का मिट्टी खाकर नीचे से ऊपर कर देना, पखेरूओं का हवा में उड़ना, मछलियों का पानी में तैरना, उसी में रहना और पानी से आक्सीजन लेना आदि, यह वह आश्चर्यनजक कार्य हैं जो वह अपनी स्थिर बुद्धि से भली भांति करते हैं, परन्तु उनके इन कार्यो में लेश मात्र उन्नति न हुई न हो सकेगी, इस लिये कि उनकी बुद्धि स्थिर है।

इसके संमुख मानव बुद्धि मनुष्य को एक दशा में ठहरने ही नहीं देती, कभी यही मानव पहाड़ की खोहों में रहता था, जंगल के फल फलारी खाता था, पत्थर फेंककर जंगली पशुओं को मार गिराता फिर उनको पत्थर, लकड़ी, हड्डी के यंत्रों से चीड़ फाड़कर कच्चा खा जाता। कहीं जाना होता तो पैदल चलकर जाता, कोई सीमा है उसकी उन्नति की एक–एक करके गिनाऊँ तो प्रातः से संध्या तथा सांझ से भोर हो जाए और बात अधूरी रह जाए, आज मनुष्य मोटर साईकिल पर चलता है, कार पर चलता है, रेल गाड़ी पर सोते हुए भागता है, आकाश में विमान द्वारा उड़ता है। रस्ता चलते अमरीका, लन्दन, अरब, आस्ट्रेलिया, अफ्रीका से बातेंकरता है, कच्चा मांस नहीं बिर्यानी, पुलाव, बाकर खानी, शीरमाल, पराठा, कबाब, हल्वा, पूड़ी कितनी स्वादिष्ट मिठइयाँ, कितने स्वादिष्ट नमकीन बनाता और खाता है।

अब वह नंगा नहीं रहता, न अपनी प्राकृतिक लज्जा से पत्तों और खाल से लज्जा अंग, छुपाता है। कोई सीमा है उसके प्रगति की, कोई गिनती है उसके वस्त्रों के प्राकरों की। हम बूढ़े तो उनके नाम भी नहीं ले पाते, गिनना तो दूर की बात है। अब वह खोहों में नहीं रहता, खोहों से निकलकर उसने न जाने कितने प्रकार के घर बनाए, तनिक उन भवनों पर एक दृष्टि तो डालें, कितने प्रकार के भवन, कितनी बनावटों के फ्लैट, एयर कन्डीशन, विद्युत से जगमग, अब कुंए, नदी, तालाब से पानी नहीं लाना है, टोंटी खोलें, पानी पाएं, जाड़ों में गर्म पानी लें, गर्मियों में ठन्डा पानी लें,

यह सब मानव की उन्नतिशील बुद्धि का चमत्कार है।

हमारे बाघ और चीते जिनकी बुद्धि सीमित तथा स्थिर है, वह तो केवल अपने मतलब के लिये आप्रेशन करना जानते हैं चीड़ा, फाड़ा, खाया चल दिये, उनकी यह चीड़ फाड़ मानव की चीड़ फाड़ से पहले की है कारण यह कि उनका जीवन ही इसी चीड़ फाड़ पर निर्भर है परन्तु आज तक वह दूसरों के लाभ के लिये कोई आप्रेशन न कर सके, आखिर मनुष्य भी तो आरंभ में इसी प्रकार चीड़ फाड़ करता था परन्तु उसकी उन्नतिशील बुद्धि ने आज उसको कहाँ पहुंचा दिया, आँख, नाक, कान मस्तिष्क, हृदय, फेफड़े, पित की थैली, गुर्दे, शरीर का कौन सा अंग है जिसका सफल आप्रेशन नहीं होता, कितने खराब अंग निकाल कर दूसरे से लेकर लगा दिये जाते हैं दांत और कई स्थानों की हड्डियाँ बनाकर लगा दी जाती हैं।

यही मनुष्य जो पहले खोहों में रहता था वह अब भव्य भवनों में मिल जुलकर रहने लगा, गांव बसे, नगर बसे, पहले जिन लोगों ने कुछ गांवों तथा नगरों का प्रतिबन्ध किया वह राजा कहलाए, उन्नति होती रही, रहन, सहन के विधान बने, व्यक्तित्व राज्य समाप्त हुए, जनतंत्र आया जहाँ के लोगों में वैधानिक नियमों को उल्लंघन हुआ वहाँ जीवन में कठिनाइयाँ आईं, अत्याचार ने जन्म लिया, रक्तपात के खेल खेले जाने लगे। निःसन्देह विधान में इन समस्याओं के समाधान का प्रावधान है, कारागार है, आर्थिक दण्ड हैं, परन्तु जब पापों का प्रचलन हो गया तो दण्ड से बचने के लिये छुपकर पाप होने लगे फिर इस जटिल समस्या का समाधान कैसे हो?

इस समस्या का समाधान तभी सम्भव है जब मन में यह बात बैठी हो कि कोई दृष्टि ऐसी भी है जो हमारी हर दशा को देखती है, हम सात कोठरियों के भीतर, रात की अंधेरियों में कोई भी कार्य करें, भला या बुरा, उस दृष्टि से छुप नहीं सकते, कोई ईश्वर कहता है, कोई खुदा कहता है, कोई गॉड कहता है। यहाँ प्रश्न उठता है कि उस ईश्वर को समझने, उससे परिचित होने और उसको पा लेने का साधन क्या है?

सत्य यह है कि हमारी उन्नतिशील बुद्धि इतना मानने पर तो विवश है कि इस संसार का कोई विधाता अवश्य है। जब एक पेन्सिल, एक पेन, एक कप, एक घड़ी बिना बनाए नहीं बन सकती तो यह सूर्य जो सारे जगत को प्रकाश तथा ताप देता है और उसके उदय तथा अस्त के नियम में कभी भी अंतर नहीं होता, स्वतः कैसे बन सकता है, यह धरती, यह आकाश, यह गगन मंडल, यह सहस्त्रों प्रकार की सृष्टि आप ही आप कैसे अस्तित्व में आ सकती है? कोई अपार शक्ति अवश्य इन सबको रचने वाली है।

आप ध्यान दीजिये साइंस में हम इतने आगे जा चुके हैं कि खून, थूक, खखार, मल, मूत्र का एक एक अुंश हमारा पैथालोजिस्ट स्पष्ट करके बताता है, अल्ट्रासाउन्ड, एक्स्रे आदि क्या क्या बात देते हैं, परन्तु नहीं बता पाते तो प्राणों के विषय में कुछ भी नहीं बता पाते कि यह कहाँ से आते हैं कहाँ चले जाते हैं, कोई मशीन आज तक यह भेद न खोल सकी।

यदि ईश्वर पथप्रदर्शन न करता तो यह बुद्धि सर पटक के मर जाती और कुछ भी समझ न पाती।

कैसे फिर होता अहो, मानव का उद्वार।
यदि सन्देश न भेजता, अपना जगदाधार।।

यहां आप को बृहस्पति जी के दोहों से आनन्दित करना चाहता हूं:

वह स्वामी प्रभु पूज्य है, वही बन्ध्य अखिलेश।
जिसने युग–युग में दिया, हमें सत्य सन्देश।।1।।
जो समृद्व करता हमें, जिसका अक्षय कोष।
केवल उससे मांगकर, करो सदा सन्तोष।।2।।
'ज्ञान' उसी का ज्ञान है, 'भक्ति' उसी की भक्ति।
'प्रेम' उसीका प्रेम है, 'शक्ति' उसी की शक्ति।।3।।
धन, गुण, विद्या रूप पर, कैसा गर्व गंवार।
यह परमेश्वर की प्रकट, लीला अपरम्पार।।4।।
कैसे फिर होता अहो, मानव का उद्वार।
यदि सन्देश न भेजता, अपना जगदाधार।।5।।
आदि मध्य अवसान का, जिसको पूरा ज्ञान।
उसने ही निर्मित किया, सच्चा नित्य विधान।।6।।
वही श्रेष्ठ है जगत् में, जो ईश्वर का भक्त।
सत्कर्मों में ही सदा, रहता है अनुरक्त।।7।।

ईश्वर से होकर विमुख, जो चाहे कल्याण।
उस मनुष्य से तो भला, प्राणहीन पाषण।।8।।
वही धन्य है जगत् में, जिनको प्रिय सद्धर्म।
ज्ञात जिन्हें कल्याण का, सत्य वास्तविक मर्म।।9।।
जन्म, जाति, अधिकार में, सभी मनुष्य समान।
ऊंच–नीच का भेद तो, करते हैं अनजान।
जिसमें कुछ का स्वार्थ हो, समझो वही कुमार्ग।
लाभप्रद जो जगत् को, वह सचमुच सन्मार्ग।।11।।
जो तुमको अप्रिय लगे, जग को अप्रिय जान।
तुझको जिसकी कामना, वह सबकोप्रिय मान।।12।।
वही हानि तो "हानि' है, वही प्राप्ति है 'प्राप्ति'।
जो अन्तिम परिणाम हो, जिसकी नहीं समाप्ति।।13।।
पापी यों ही फूलते, कर–करके अन्याय।
किन्तु बताएगा उन्हें, अन्तिम दिन का न्याय।।14।।
स्वार्थ, वासना अज्ञता, पक्षपात से युक्त।
मानव क्यों ईश्वर बने,सर्वतन्त्र उन्मुक्त।।15।।

हाँ हाँ मनुष्य टेक्नालोजी में बहुत आगे जा चुका है और बराबर चला जा रहा है। साइंस बहुत आगे जा चुकी है और चली जा रही है विमानों का अविषकरण ही क्या कम था अब उसकी गति तथा उसके बेग की कोई सीमा है? कैसे कैसे यंत्र, राकिट, एटम बम, हाइड्रोजन बम और पता नहीं कौन–कौन से बम। चन्द्रमा में राकिट द्वारा मनुष्य पहुंच कर लौट भी आया अब अपोलो की तैयारी है। राकिट छोड़ा जा चुका है जो एक सिकन्ड में 16 किलो मीटर की गति से जा रहा है 16 जनवरी 2006 में छोड़ा हुआ राकिट इस वेग से चल कर साढ़े नौ वर्षों के पश्चात 14 जुलाई 2015 ई0 में अपोलो में उतरेगा इन उन्नतों को उन्नति नहीं चमत्कार ही कहना चाहिए परन्तु जरा इन चमत्कारियों से पूछिये और स्वंय सोचिये अन्डे से मुर्गी निकलती है और मुर्गी से अन्डा इनमें पहले कौन पैदा हुआ और कैसे? इसी प्रकार सोच डालिये पुरूष पहले पैदा हुआ था या स्त्री और कैसे? पेड़ पहले पैदा हुआ या उसका बीज और कैसे? सत्य यह है कि किसी के पास भी उचित उत्तर नहीं है। इस का उत्तर है तो उसी के पास जिसको उसके पैदा करने वाले ने सवयं सुझाया।

यह जो आप हिन्दू धर्म, इस्लाम धर्म, सिख धर्म, ईसाई धर्म, यहूदी धर्म देख रहे हैं यह किसी की बुद्धि से नहीं बने हैं। यद्यपि मुझे इस्लाम के अतिरिक्त किसी धर्म का भरपूर ज्ञान नहीं है परन्तु कई धर्मों के मौलिक तत्वों का अध्ययन किया है और उसके आधार पर कह सकता हूँ कि हर धर्म वाले का यही कहना है कि हमारा धर्म ईश धर्म और हमारा धार्मिक ग्रन्थ ईशवाणी है। और इस कथन को झुटलाने के लिये हमारे पास कोई उचित तर्क भी नहीं है। बस एक बात खटकती है कि जब सब एक मालिक, एक विधाता, एक निर्माता मानते हैं तो यदि सभी धर्म उसी के हैं तो इन सबमें मतभेद क्यों है। इतना मतभेद कि एक दूसरे का विलोम, यहां यह बात तो स्पष्ट है कि इसका कारण मानवी हस्तक्षेप है परन्तु इस झगड़े में पड़ना हमारे मिशन के विरोध में है। ऐसी स्थिति में जब हमको एक साथ रहना है और हमारे धर्मों में प्रतिकूलता है तो हमारा कर्तव्य क्या बनता है? हम को चाहिये कि जिन धार्मिक विश्वासों अथवा कर्मों में प्रतिकूलता है, विभिन्नता है, उनको हम जिसके धर्म में जो है उसको उस धर्म वाले के लिये छोड़ दें और सम्मिलित सभाओं में उसको कभी वाद विवाद में न लाएं, परन्तु ईश्वर से यह प्रार्थना अवश्य करते रहें कि हे जगत के निर्माता! हे हमारे स्वामी हम को सत्य मार्ग दिखाकर उस को ग्रहण करने का सामर्थ्य दे, तथा कुमार्ग दर्शाकर उससे बचने का सामर्थ्य दे। मानवता का सन्देश सम्बन्धित गोष्ठी के मंच पर हम केवल उन बातों की ओर लोगों को बुलाए जो सभी धर्मों में पाई जाती हैं और जो सामाजिक जीवन की शान्ति के लिये अनिवार्य भी है और पर्याप्त भी, उनमें सर्वप्रथम है ईश्वर को उसकी शक्तियों अर्थात गुणों के साथ मानना, यह मानना कि न तो उससे कुछ छुप सकता है, न कोई पापी उसकी पकड़ से बच सकता है। यदि यह मुख्य बात मनुष्य के मन में विद्यमान रहे तो समाज के सुधरने में देर न लगे, फिर तो संसार से अत्याचार विदा हो जाए परन्तु यह बात हर मन में पैदा होना सरल नहीं है और यदि मनुष्य चाहे तो बहुत सरल भी है। हर मनुष्य को चाहिये कि वह

किसी धर्म गुरू से यह बात सीखे। मानव जाति के लिये यह तत्व अति आवश्यक है और मानवता का यह वह सन्देश है जिसे कोई भी धर्म वाला नकार नहीं सकता।

रहीम कहतें हैं :–

अमर बेल बिन मूल की प्रति पालत है ताहि।
रहिमन ऐसे प्रभुहि तज खोजत फिरये काहि।।

उस ईश्वर ने तो ऐसी व्यवस्था कर रखी है कि बिना मूल अर्थात बिना जड़ की अमर बेल को भी उस की जीविका पहुंचा कर उसे जीवित रखता है उसे छोड़कर किसे ढूढ़ते फिरते हो। अरे वह तो कुसवारी के बन्द किरवा को भी जीवित रखता है और व्हेल मछलियों और हाथियों के पेट भी भरता है। उस शक्ति को मानकर उस पर पूरा भरोसा रखें। कबीर कहते हैं:–

जा को राखे साइयां मार न साकिहै कोए।
बाल न बांका कर सकै जो जग बैरी होए।।

तो पहली बात तो यह हुई कि ईश्वर पर विश्वास हो मन में उसका प्रेम हो, धर्म गुरुओं से इस सत्य ज्ञान को प्राप्त करें हर दशा में उसका ध्यान रहे।

दूसरी बात यह कि उसकी सृष्टि से प्रेम हो, मनुष्य के मन में दूसरे मनुष्य के लिये सहानुभूति हो, मनुष्य ही नहीं अपितु हर जीवधारी के लिये सहानुभूति हो यह शिक्षा भी हर धर्म में पाई जाती है अतः मानवता के सन्देश में इसको जोड़ना अनिवार्य है।

सहानुभूति चाहिये महाविभूति है यही।

यहां मैं आप को इस विषय से सम्बन्धित मैथलीषरण जी की एक कविता सुनाना चाहता हूं।

विचार लो कि मर्त्य हो न मृत्यु से डरो कभी,
मरो परन्तु यों मरो कि याद जो करें सभी।
हुई न यों सुमृत्यु तो वृथा मरे वृथा जिए,
मरा नहीं वही कि जो जिया न आपके लिए।
यही पशु प्रवृत्ति है कि आप–आप ही चरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।
सहानुभूति चाहिए महाविभूति है यही,
वशीकृता सदैव है बनी हुई स्वयं मही।
विरुद्धवाद बुद्ध का दया–प्रवाह में बहा,
विनीत लोकवर्ग क्या न सामने झुका रहा?
अहा! वही उदार है परोपकार जो करे,
वही मनुष्य है जो मुनष्य के लिए मरे।
"मनुष्यमात्र बन्धु हैं" यही बड़ा विवेक है,
भलानुसार कर्म के अवश्य बाह्म भेद है।
अनर्थ है कि बन्धु ही न बन्धु की व्यथा हरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।
चलो अभीष्ट मार्ग में सहर्ष खेलते हुए,
विपत्ति विघ्न जो पड़ें उन्हें ढकेलते हुए,
तभी समर्थ भाव है कि तारता हुआ तरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।

यदि समाज में सहानुभूति का वातावरण उत्पन्न हो जाए तो समाज शान्तिमय हो जाए।

तीसरी बात जो हर धर्म में अभीष्ट है और जो मानवता का महत्वपूर्ण सन्देश है वह कर्तव्य प्रायणता है आज मानव जाति में इसकी बड़ी कमी दिखाई पड़ती है। समाज में यह अशान्ति इसी कर्तव्य प्रायणता के अभाव के कारण है। यदि हर अधिकारी, हर कर्मचारी अपने कर्तव्य का पालन करे, हर गरू, हर विद्यार्थी अपने कर्तव्य का पालन करे, वैद्य, डाक्टर, हकीम, इन्जीनियर, ठेकेदार, पुलिस, दरोगा के विषय में तनिक सोचिये तो कहाँ–कहाँ पानी मर रहा है और लोगों की कोताहियों से समाज कितना प्रभावित हो चुका है, यदि हर मनुष्य अपने कर्तव्य का पालन करे तो समाज कितना शान्तिमय हो जाए।

यह तीन बातें बहुत ही महत्वपूर्ण हैं ईशज्ञान और उसका ध्यान, सहानुभूति, और कर्तव्य प्रायणता इस के पश्चात बहुत सी ऐसी बातें हैं जो एक अच्छे समाज के लिये आवश्यक हैं और जो हर धर्म की शिक्षाओं में विद्यमान हैं जैसेः

सत्य अपनाना और असत्य को त्यागना, कबीर कहते हैं :–

सांच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप
जाके मन में सांच है, ताके मन में आप

जारी ... ❑❑

अंतरराष्ट्रीय समाचार

– डॉ0 मुइद अशरफ

आडवाणी भी जानते हैं उनका प्रधानमंत्री बनना मुश्किलः गोविंदाचार्य

राष्ट्रवादी ने कहा कि लालकृष्ण आडवाणी का प्रधानमंत्री बनना मुश्किल है और वह स्वयं भी इस बात को जानते है। उन्होंन आज यहां कुछ संवाददाताओं से अनौपचारिक बातचीत में कहां कि जिन्ना की ओर जाते हुए आडवाणी खुद भी जानते हैं कि रामसेतु और अमरनाथ जैसे मुद्दों को वह रामजन्म भूमि की तरह राजनीतिक मोड़ देने में सफल सिद्ध नहीं हो सकते हैं। उनका यह पद हासिल करना वर्तमान परस्थितियों में मुश्किल होगा जैसे ही रामसेतु की बात होगी तो भाजपा विरोधी यह साबित करने से पीछे नहीं रहेंगे कि इसका निर्णय तो एनडीए शासनकाल में ही हो चुका था।

एनएसजी परमाणु ऊर्जा नियंत्रक संगठनः–

एनएसजी यानी न्यूक्लियर सप्लायर ग्रुप परमाणु ऊर्जा के शांतिपूर्ण प्रसार को बढ़ावा देने वाले देशों का समूह है समूह के 45 सदस्य देश हैं। ये देश दूनिया के प्रमुख यमरेनियम उत्पादक देश है। इनका प्रमुख उद्देश्य यही है कि जिन देशों ने परमाणु अप्रसार संधि पर हस्ताक्षर नहीं किये हैं, उन्हें परमाणु ईधन की सप्लाई न की जाए। समूह परमाणु अप्रसार के मामले में सेफगार्ड के तौर कार्य करता है। समूह देश दुनिया के 80 प्रतिशत यूरेनियम रिजर्व के मालिक हैं और कुल उत्पादन में इनकी हिस्सेदारी 78 प्रतिशत है। केवल तीन देश ऐसे है जो यूरेनियम उत्पादन में महत्वपूर्ण स्थान रखते हुए भी समूह से बाहर है। ये है– नामीबिया,नाइजर और उजबेकिरतान। वैसे न्यूक्लियर वैपन फ्री जोन ट्रीटी के जरिए ये देश भी परमाणु अप्रसार के लिए प्रतिबद्ध हैं।

संगठन का इतिहास और भारतः– समूह की स्थपना 1975 में की गई थी। इसका तात्कालिक कारण 1974 में भारत द्वारा किया गया पहला परमाणु परिक्षण। स्थापना की पहले अमेरिका ने की। शुरू में एनएसजी में केवल सात देश शामिल थें। 1975 से 1978 के बीच हुई समूह की अनेक बैठकों के बाद तय किया गया कि जिन देशों ने परमाणु अप्रसार संधि पर हस्ताक्षर नहीं किये हैं,उन्हें परमाणु तकनीक या यूरेनियम की राप्लाई न की जाए। किन–किन वस्तुओं का निर्यात नहीं किया जा सकेगा इसके लिए ट्रिगर लिस्ट बनाई गई। ट्रिगर लिस्ट की सामग्री का आयात–निर्यात पूरी तरह प्रतिबंधित था। लेकिन यह अंतराष्ट्रीय संधि नहीं थी। यही कारण था कि भारत को अपनी जरूरत की सामग्री फ्रांस और रूस से आसानी से मिलती रही। बाधा 1992 में आईएईए की सक्रियता से हुए वारसा समझौते के बाद खड़ी हुई। वारसा पैक्ट के अनुसार यह तय हुआ कि जो भी देश ट्रिगर लिस्ट में शामिल सामान का आयात चाहते हैं उन्हें पहले आईएईए सेफगार्ड एग्रीमेंट करना होगा। इसके बाद भारत वही न्यूक्लियर सागग्री पा सका जिसके संदर्भ में समझौता 1992 के पहले ही हो गया था। एनएसजी की सहमति के लिए जरूरी है कि इसके प्रत्येक देश समझौता के प्रारूप से पूरी तरह सहमत हों।

एनएराजी और भारत-अमेरिका न्यूक्लियर डीलः– भारत–अमेरिका न्यूक्लियर डील तभी सफल हो सकती है जब भारत को ट्रिगर लिस्ट के सामान की निर्यात करने की छूट मिले। इसके लिए एनएसजी की सहमति जरूरी है। अभी न्यूजीलैंड, आयरलैंड, ऑस्ट्रिया, स्विटजरलैंड जैसे देश बगैर परमाणु अप्रसार संधि किए किसी भी देश को ऐसी छूट देने के पक्ष में नहीं हैं। ये देश भारत द्वारा यह औपचारिक घोषणा चाहते हैं कि वह भविष्य में परमाणु परीक्षण नहीं करेगा। भारत–अमेरिका परमाण समझौते के संदर्भ में एनएसजी की पहलली बैठक में गतिरोध खत्म नहीं हो सका है। संभव है संगझौते के प्रारूप में कुछ परिवर्तन करना पड़े। एनएसजी की दूसरी बैठक सितंबर के पहले सप्ताह में होने वाली हैं।

❑❑